मूल्य —एक रुपया आठ आना

नवयुग प्रकाशन चावड़ी बाजार, दिल्ली, द्वारा
प्रकाशित तथा रामा कृष्णा प्रेस कटरा नील,
चाँदनी चौक दिल्ली में मुद्रित

अनुक्रमणिका

विषय पृष्ठ

१. जीवन और विकास

एक बार एक कुआँ जो एक नदी के पास ही था उसकी नुक्ताचीनी किया करता था।

"सारी कीचड मे लथपथ है, है इतनी दूर कि कोई छू भी न सके। दिन भर चपर-चपर करती रहती है और बस बहे जाती है—यह भी कोई जिन्दगी है? तुम्हे तो चाहिये कि मुझ जैसी गहरी और सहिष्णु बनो और धूल को अपने पास फटकने तक न दो। सारा दिन मै अपनी छोटी-सी खिडकी मे से [illegible] आकाश को तकता रहता हूँ और सृष्टि के रहस्यो का पता लगाता हूँ—और यही एक सफल जीवन बिताने का ढग है।"

एक दिन कीचड मे लथपथ नदी उमडी और ऐसी बिफरी कि एक जोर की गरज के साथ अपने किनारो को लपेट मे लेती हुई आस-पास के देहाती प्रदेश को बहा ले गई और उसी के साथ कुएँ के लकडी के जगले का भी सफाया हो गया। कुआँ बाढ मे डूब गया और उसके साथ ही उसका गहरा सहिष्णु-जीवन भी पानी मे गर्क हो गया।

२. सुबह के बादल

बहुत दिन हुये कहा जाता है कि समुद्र मे एक मत्स्यागना रहती थी। प्रति दिन, सूर्योदय से बहुत पहले वह एक द्वीप पर चढ जाती और एक चट्टान पर बैठ कर सूर्योदय की बाट जोहती। किन्तु उसकी बडी बहन ने सोचा कि वह इतने सवेरे जाकर अपना बहुत-सा समय नष्ट करती है। अत वह हर बार पानी से अपना सिर बाहर निकालती और दूर ही से अपनी छोटी बहन को डाँटती-फटकारती।

"ओ री आलसन ! समय बडा कीमती है। क्या उसके निकलने के पहले तुझे और कोई काम नही ? तेरे दोनो हाथ सदा बेकार रहते है "

इसलिये मत्स्यागना ने इधर-उधर से बादल और कुहरा अपने समीप समेटा और द्वीप पर बैठकर ऐसी मेहनत के साथ बुनने मे लग गई जैसे घर बैठी बुन रही हो। शीघ्र ही सूर्य उदय हुआ तो पहला काम उसने यह किया कि अपनी किरणो से समुद्र की जाच की। और जब बादलो का महीन जाल जो मत्स्यागना ने बुना था सूर्य की किरणो से फटा तो वही जाल इन्द्रधनुष के रगो वाला एक चमकीला बादल बन गया।

शानदार उद्देश्य के लिये किया गया सारा कार्य और सारा श्रम सुन्दर होता है।

एक ऐसा प्राणी जिसका सिर व धड स्त्री जैसा और दुम मछली की सी होती है।

३. कला और न्याय

एक साँप ने अपने बिल से सिर निकाला और एक तीतर को जो भोजन तलाश कर रहा था, मार डाला। जब तीतर की साथिन तीतरी को अपने पति की बेवक्त मौत की खबर मिली तो उसे रज के साथ-साथ बडा क्रोध भी आया। अब तो उसने ऐसे ज़ोर-ज़ोर से रो-रोकर शोक मनाया कि सुनकर कलेजा मुँह को आने लगा। उसके रोने-धोने और मातम से हरे-भरे जगल पर एक अधकार-सा छा गया और वह भी चुप और उदास हो गया।

एक प्रतिभाशाली सगीतज्ञ ने जो वहा से गुजर रहा था बडे ध्यान से यह रोना सुना और उसका हृदय पिघल गया। उसने कहा, "आह! इस करुण रोदन से आत्मा को कितना दुख होता है यह केवल आवाज ही बता सकती है।"

फिर सगीतज्ञ ने एक धुन बनाई और अपने बाजे द्वारा बहुत सख्त गुस्सा दिखाया। जिस किसी ने भी यह धुन सुनी—चाहे कडकडाती सर्द सुबह के समय, शान्त रात्रि में या आनन्दित दिन के समय—उसका खून खौलने लगा और हृदय धडकने लगा। उसके वाद हरेक उस साँप की तलाश मे निकल पडे। और जो भी साँप उन्हे मिला उन्होने उसे पीटा चाहे उसने तीतर को मारा हो या नही।

कला न्याय के लिये है। यह मनुष्यो को दुराचार के दड देने के लिए उकसाती है।

४. मित्र और शत्रु

एक दिन एक किसान गेहूँ काटने अपने खेत पर गया। गुरैयो का एक दल गेहूँ की बालियो पर उतरा और किसान से बोला "ओ प्यारे किसान हम यह नही भूले है कि तुमने अपने खून पसीने से किस तरह हमे भोजन दिया है। अब इस सुहानी गरमी के आरम्भ में जो कि किसानो की सबसे ज्यादा काम की ऋतु है हम एक विशेष गीत गाकर तुम्हारा एहसान चुकाने आये है। हम तुम्हारे मित्र है!" यह कह चुकने के बाद वे सब मिलकर चहचहाने लगी और साथ ही अपने मुँह गेहूँ से फुर्ती के साथ भरने लगी।

क्रुद्ध किसान ने उन्हे भगाने के लिये मिट्टी के ढेले उन पर फेंके और गुस्से मे कहा, "वाह! बदमाशो का टोला एक तरफ तो हमारा शोषण करता है ऊपर से कहता है हम उनकी सहायता करते है। समझते है मुझे अपनी सस्कृति से इतना लगाव है कि एक गुरैया का गीत सुनने के लिये मै उसकी चोच भर के गेहूँ खिला दूँगा! मुझे ऐसे मित्रो की कोई आवश्यकता नही है, मै इन कवियो को अभी रवाना करता हूँ।"

जब गौरैये उड गई तो कुछ अबाबीले गेहूँ के खेत मे से कीडे-मकोडे पकडने के लिये उतर आई। कही उन्हे घोआ दीखा तो कही झींगुर और उन्होने सब को चट कर लिया। तुरन्त ही वे फिर आकाश की ओर अपना सुन्दर गाना गाती हुई और सबको आनन्दित करते हुये उड गई। यहाँ तक कि

किसान ने भी क्षण भर के लिये अपना सिर उठाया और आकाश की ओर देखा फिर वह अपनी कटाई में लग गया और सन्तुष्ट हो अपने आपसे कहने लगा।

"लोग ठीक ही कहते है, अबाबीलें वास्तव में अच्छे पक्षी है। न सिर्फ उन पर कुछ खर्च करना पडता है बल्कि वे तो हमारी फसल के कीडो को नष्ट करके हमारी सहायता करती है। और फिर वे आकाश मे उड जाती है और इतनी ऊँची उड जाती है कि सुखद लगती है लेकिन वे कोई शेखी नही बघारती। उन्हे देख कर आँखो को आनन्द मिलता है। और वे इतनी मधुरता और स्पष्टता से गाती है कि ऐसा लगता है मानो यह नीला आकाश उनके गीत से जीवित हो उठा है। आह, इस प्रकार के कवि ही जनता के सच्चे मित्र होते है।"

५. आलस और साहस

एक चिडिया आकाश मे उड रही थी। उसने अपने आप से विश्वास के साथ कहा, "मै उस सफेद बादल को अपना लक्ष्य बनाऊँगी और उसे पकड लूँगी।"

अपने पख चोच से सँवार कर उसने भरपूर शक्ति से ऊपर उडने की कोशिश की। किन्तु सफेद बादल कभी पूर्व मे तो कभी पश्चिम मे अधाधुध तैरने लगा। कभी वह अचानाक रुक जाता और वही चक्कर काटने लगता जैसे कोई घमण्डी विल्ली मक्खियाँ पकडने के लिये बार-बार चक्कर काटती है। फिर अचानक किसी घमण्डी आलसी स्त्री जो रेशमी कपडो में लिपटी हुई स्त्री की भाँति वह धीरे-धीरे छटना शुरु कर देता और अपना आलसी शरीर सीधा करता। वल्कि इससे भी वढकर वह यह करता कि अचानक छटकर आँखो से विल्कुल ओझल हो जाता।

फिर चिडिया ने दृढता से कहा, "नही, यह नही चलेगा! मुझे तो वे पहाड की ऊँची चोटियाँ अपना लक्ष्य वनाना चाहिये। ऊँचे पहाड इतने अटल और इतने सबल है, इतने महान सुन्दर है कि मै उनसे शक्ति और साहस प्राप्त कर सकती हूँ। और उनके ऊपर से उडते हुये मुझे वहुत खुशी होती है क्योकि जैसे-जैसे मै एक चोटी से दूसरी चोटी पर जाती हूँ मुझे ऐसा लगता है जैसे मै एक राक्षस के सिर से दूसरे के सिर पर चल रही हूँ।"

इतिहास के ऐसे मजवूत और साफ मार्ग पर चलकर जनता के सच्चे शानदार उद्देश्य को आगे वढाओ।

६. व्यक्ति और समूह

एक बढई किसी इमारत के लिए एक उम्दा किस्म का वडा पेड ढूँढने के लिये जगल को गया। लेकिन बेचारे ने सारा जगल छान मारा और कही उसे मतलब का पेड न मिला।

उसने कहा, "ये तो सब के सब एक ही उँचाई के है। इनमे एक भी तो ऐसा नही जो बाकियो से बडा हो।" निराशा में डूबा गरीब वापस आने को ही था कि अचानक उसकी नजर जगल के आखिरी सिरे पर खडे एक दरख्त पर पडी जो उसके मतलब का था। वह खुशी से फूला न समाया, "आहा ! यह है जिसकी मै घण्टो से तलाश में था। इसकी वरावरी का तो पेड सारे जगल भर मे नही दीखता !"

लेकिन दरख्त ने उत्तर दिया, "नही भई, यही तो तुम गलती करते हो। शायद तुमने भी उन गदे लोगो की किताबे पढी है जो कहते है कि हमारी कोई वास्तविकता नही है यह सही है कि मै बाकी दरख्तो के बिल्कुल पीछे हूँ पर हूँ उन सवमें का ही। समूह में मिलकर तो हम सब एक जूट है लेकिन वैसे अलग रहकर मै वडी से वडी इमारत को अकेला काफी हूँ। अब अगर तुम यह समझो कि इसमें कोई विशेषता नही तो हममे से किसी में भी विशेषता नही और यदि तुम समझो कि यह बात मार्के की है तो हममें से हरेक और हम सब वडे मार्के के है।"

७. सवेरा

रोजाना पौ फटते ही जगल के तमाम छोटे-छोटे पक्षी चरचराने लगते और वृक्षो की चोटियो पर पहुँच कर कूद-फाँद मचाने लगते फिर कुछ पक्ष गीत पर गीत गाते और ऊपर आकाश मे उड जाते। मानो सब एक दूसरे से कह रहे हो कि सूरज जरा देर मे निकलने वाला है और पल भर मे सवेरा हो जायगा। और सवेरा कितना प्यारा होता है!

लेकिन एक गिलहरी जो रात भर एक चितकबरे साँप के साथ जुआ खेलती रही थी और अब गहरी नीद सो रही थी पक्षियो की चहचहाहट से जाग उठी और उन्हे फटकारने लगी —

"ओ री पख वालियो जाओ अपने बिलो मे! सवेरा सवेरा लगा रखा है—हर रोज सवेरा होता है। उसे देख-देख कर और उसके बारे मे बाते करते-करते तुम थकती नही?"

पक्षी अपनी चीख-पुकार में ऐसे व्यस्त थे कि उन्हे कुछ सुनाई ही नही दिया। लेकिन एक पेड ने जो यह सब उलाहना सुन रहा था बडे गुस्से से कहा

"देखो दोस्त, दूसरी बातो को जाने दो लेकिन सवेरे के बारे मे अगर तुमने कोई बुरी बात की तो मै उसे सहन नही कर सकता। तुम्हारा मतलब है लोग सवेरे से भी ऊब सकते है?"

"बिल्कुल सच कहा," एक घिसी-पिटी चट्टान बोली

"विद्वान लोगो ने जो मुझे बताया है उसके अनुसार मै ५ लाख वर्षों की हूँ लेकिन वास्तव मे सवेरे से मै कभी नही थकी ।"

"यह असलियत है । सवेरा सदा नया होता है।" एक मेढक तालाब मे से बोला ।

एक कीडा चक्कर खाता हुआ आया और हाँपते हुये बोला, "कौन कहता है सवेरा पुराना हो गया है ? क्या इस बदमाश गिलहरी ने कहा है ? मै तो भई कभी ऐसा नही कह सकता ! ऐसा विचार मेरे दिमाग मे तो आज तक आया नही ।"

एक दम आकाश हल्के मुर्झाये हुये गुलाब में बदल गया और पृथ्वी का रग हल्का हरा हो गया । सारी आवाजे फिर आने लगी और सूर्य तक गर्म लोहे की मिट्टी की शक्ल मे जालदार बादलो में ढका हुआ निकल आया । सारी आँखे उसकी ओर लग गई और सूर्य ने एकदम अपना जाल उतार फेका औरइस प्रकार से अपना नटखट मुख दिखाया जैसे किसी को चिढा रहा हो—जैसे खासकर उस चहचहाती हुई चिडियो को चिढा रहा हो । फिर वे जोर से हँस पडे और चिडियाँ अपना कोरस और जोर से गाती हुई आकाश की दिशाओ मे उडने लगी ।

यहाँ तक कि वह बदमाश गिलहरी भी उठ गई और आखें मलते हुए कहने लगी

"आज तो बडा सुहावना दिन निकला है !"

८. जिन्दगी मुस्करायेगी

एक था बाज। वह मरुस्थल मे रहता था जहाँ न फौवारे थे न जगल। चुनाचे वह आकाश मे खूब ऊपर तक उड गया ताकि अपना इच्छित दृश्य देख सके। पूर्व मे तो उसे असीम महासागर दूर-दूर तक फैला हुआ नजर आया, उत्तर मे खूब घना जगल था जो सैकडो मील तक फैला हुआ था। पश्चिम मे मनमोहक रग बदलते हुये बादल छाये हुये थे जो घडी मे उडते, घडी मे नाचते और दक्षिण मे हरा भरा मैदान था जो मखमल की तरह चिकना था।

अब बाज पानी के लिए पूर्व की ओर उडा। फासला कोई तीन हजार मील का था और शाम को रेगिस्तान लौटने के लिए जहाँ वह रात बिताना चाहता था उसे उतने ही मील और तै करने थे। टहनिया तोडने के लिए वह उत्तर मे स्थित जगल को गया। वहाँ भी वही छ हज़ार मील का सफर उसे तै करना पडा क्योकि रात तो वह रेगिस्तान मे आकर बिताना चाहता था और जब कभी उत्तर या दक्षिण मे गया उसे आने जाने मे छ हजार मील की दूरी तै करनी पडी।

इस दूर-दराज की यात्रा बाज के लिए थका देने वाली और ध्वस्त रखने वाली साबित हुई कि पूर्वीय महासागर ने उससे कहा "ऐसी भी क्या जान तोडते हो? जरा थोडी देर और मेरे ऊपर घूमो-फिरो, मेरा राज्य देखो और यहाँ के दृश्यो को देखो। मेरा राज्य कुछ छोटा नही है। मुझ मे बडे असाधारण द्वीप है बडे अपूर्व और अनोखे अजगर मछलियाँ और समुद्री

पक्षी मेरे अन्दर रहते है। क्या तुम्हे तूफान पसन्द है ? तो ज़रा ठहरो अभी ज़रा देर मे उठेगा और तुम उसे देखकर पुलकित हो उठोगे। और अँधेरा हो जाने पर तुम समुद्र के जिस गार मे भी चाहो आराम कर सकते हो।"

लेकिन बाज ने जवाब दिया "नमस्कार ! मै कल वापस आऊँगा।" पानी लेकर कुछ देर वह समुद्र पर उडा और फिर वापस चला गया।"

उत्तरी जगल ने भी उससे प्रार्थना की "जरा कुछ देर और ठहर जाओ दोस्त ! शाम हो रही है, मेरा ख्याल है रात को तुम यही सो जाना। मेरा यह जगल पसद भी आया तुम्हे ? इसकी सवसे बडी खूबी यह है कि आदि जमाने से लेकर आज तक कोई भी मेरी सीमा के आखीर तक नही पहुचा है। वहुत बडा राज्य है यह ! यहाँ के लोग बडे ईमानदार हे और भलमनसाहत से जीवन बिताते है। उनकी बस एक ही विश-पता है कि पुरुष नाच ससद करते है और स्त्रियो को सङ्गीत प्रिय है। यदि तुम उनसे मिलना चाहो तो मै रीछ और बुल-वुल से परिचित करा सकता हूँ। मेरी तो हार्दिक इच्छा यह है कि तुम यहाँ कुछ दिन के लिए ठहर जाते। यहाँ तुम वेह-तरीन रात गुजार सकने हो जैसे ही तुम आँखे वन्द करोगे तुम्हे स्वप्न मे जगल का 'अनन्त स्वप्न' दिखाई देगा—चाहे वह गर्मी की गहरी हरियाली हो या सर्दी का सफेद वर्फ–लेकिन वह सव होगा अनन्त ही "

लेकिन वाज़ ने पहले की तरह जवाव दिया "नमस्ते !

मै कल आऊँगा ।" फिर उसने अपनी चोच से एक टहनी तोडी, जगल का एक चक्कर काटा और सीधा वापस आ गया ।

पश्चिम के फले फूले चमकीले बादलो ने बाज को लुभाने की पूरी कोशिश की और कहा, कुछ देर मेरे साथ नाचो ना ! आओ हम इसी तरह नाचे जाते है और नाचते-नाचते पश्चिमी आकाश मे उड जाते है और फिर वहा से कभी नीचे नही आयेंगे । आह, तुम्हारे साथ रहने मे कितना सुख मिलता है !"

लेकिन बाज व्यस्त यात्रियो की भाँति कुछ देर तक उन चमकीले बादलो के साथ पश्चिमी आकाश में उडता रहा और फिर बोला "नमस्ते तुम कितने सुन्दर लगते हो ?"

दक्षिण की हरी-भरी धरती ने अपने आपको ऐसा सजाया कि वह बसत की प्रतिमा दिखाई देने लगी । उसने बाज से कहा "तुम ऐसी जल्दी मे सिर पर चक्कर लगाकर क्यो उड जाते हो ? नीचे आओ हम जरा इस बात पर बहस करेगे कि धूप, मेहनत और प्रेम जिन्दगी को दुबला करते है या ."

बाज ने कहा, "हाँ, मै बसन्त ऋतु को जानता हूँ । लेकिन नमस्ते, मै फिर कभी आऊँगा ।"

रात को बाज अपने रेगिस्तानी घोसले में आकर ही सोया । बहुधा ऐसा होता कि दिन के जोशीले कामो और अनुभवो को याद करके उसे घण्टो नीद नही आती । ऐसे समय वह अपने आपसे कहता, "मै तो अब वास्तव में बहुत बडा

आदमी बन गया हूँ, दिन भर न काम न काज और मै हूँ सास लेने की फुर्सत नही मिलती फिर भी मुझे उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम सभी से समान प्रेम है। वे सब कितने सुन्दर है! लेकिन रेगिस्तान की रातो का स्वाद मै नही छोड सकता और दिन में ऊपर उडने और चक्कर खाने मे जो मज़ा आता है उसे छोड देना भी असम्भव है। सत्य तो यह है कि मैं समुद्र से पानी, जगल से टहनियाँ, पश्चिम से बादल और दक्षिण का बसत को इस मरुस्थल मे लाना चाहता हूँ। उस तरह मै और भी व्यस्त रहूँगा। लेकिन कुछ ही क्यो न हो जाय यह तो मुझे हर कीमत पर करना ही है और मुझे विश्वास है मै अपनी योजना पूरी कर लूँगा। वह दिन दूर नही जब मेरे रेगिस्तान में फौवारे भी होगे और जगल भी। मेरा यह लक्ष्य चाहे एक सुपना ही-सा क्यो न लगे फिर भी यह है असली और मुझे तो इसका विचार-मात्र ही आनन्दित कर देता है।

अब तो बाज ने आगे-पीछे उडना जारी कर दिया और उसने इसे कभी कष्ट कर न समझा।

६. प्रेम और जीवन

एक था शिकारी—बडा बहादुर और भला मानुस । उसकी पत्नी दूसरों के सामने उसकी तारीफो के पुल बाँधती रहती "मेरा पति भैया बडा अच्छा है ! हम दोनो की खूब निभती है । जब कभी भी वह बाहर निकलता है इतने प्यार से पेश आता है जब वापस आता है तब भी प्यार बिखेरता हुआ आता है, मै तो उस पर लट्टू हूँ !"

लेकिन एक दिन शिकारी बाहर गया तो आधी रात तक न लौटा । और न ही उसने अपनी पत्नी को कोई सन्देशा भेजा । असल मे यही उसका सौभाग्य था कि वह जिन्दा लौट आया क्योकि उसकी एक भयानक पशु से मुठभेड हो गई थी और वह बडी देर उससे टक्कर लेने के बाद वहा से भाग सका था । उसके वाद से वह वहुत उदास रहने लगा और पत्नी से प्रेम करना छोड दिया । ऐसा हो गया जैसे उसे अपनी पत्नी से कोई सरोकार नही है । उसकी पत्नी उससे वडी नजाकत से पेश आती और उससे प्रेम की भीख मागती पर असफल रहती । फिर फूट फूट-कर रोने लगी और वेहोश हो गई । लेकिन इस पर भी शिकारी का दिल न पसीजा । कुछ दिनो वाद वह भी खामोश, उदास और लापरवाह हो गई ।

एक दिन शिकारी फिर वाहर गया और आधी रात तक न लौटा । पर जैसे ही वह उछलता हुआ दरवाजे मे दाखिल हुआ कि उसने अपनी वीवी को पकड लिया और पागलो की तरह उसे खूब नचाया-घुमाया । यहाँ तक कि उसे चक्कर आने लगे

और वह गिर पडी । फिर भी वह नाचता रहा और खुशी मे चिल्लाता रहा ।

"ऐ बीवी, आ हम खुशी हो, सुख से रहे ! ..." वह इतने जोर से चीखा कि कमरा हिल गया । पडौसी दौडे चले आये और ज्योही व आँगन मे दाखिल हुये उन्होने एक हिंस्र जन्तु की लाश देखी जो वह उठा कर घर ले आया था ।

जाहिर है हम सभी जीवन में सुख और आनन्द चाहते हे । और मेहनत कश लोग दूसरे प्राणियो की अपेक्षा अधिक सुख और प्रेम नहीं चाहते ? और लोगो की उदासी क्रूर, निर्दय और स्वेच्छाचारी शासन ही का परिणाम नही है ? लेकिन उदास लोग जिंदगी में केवल परिश्रम नही करते बल्कि जिन्दगी में सघर्ष भी करते है यहाँ तक कि उनकी विजय सिद्ध कर देती है कि आनन्द व प्रेम जीवन से अभिन्न है और जनता भी उससे भिन्न नही है ।

१०. जीवन और सूर्य

एक दिन सूर्य जो अस्त हो रहा था सहसा रुका और उसने फिर कर रेगिस्तान को देखा, और अपनी प्रज्वलित किरणो से रेगिस्तान को ऐसा रंग दिया कि वह रक्त-सागर दिखाई देने लगा। एक शेर जो वहाँ शाति पूर्वक घम रहा था उसने महसूस किया कि यह सुन्दर दृश्य फिर कभी न आयेगा और उसे एक ऐसी अवर्णनीय आकाँक्षा ने घेर लिया और उसने दुखित हो कहा "आह अब मै समझा यह वह चमकदार गोला है जिसने मेरे राज्य को इतना जगमगा दिया है। लेकिन क्षरण भर मे यह सब अदृश्य हो जायगा, हाँ अगर मैं रेगिस्तान का राजा—इसे दबोच कर वापस न ले आऊँ।"

फिर तो शेर की घमनियो मे खून तेजी से दौडने लगा और बिजली की-सी तेजी के साथ पश्चिम की ओर भागा और उसके पीछे लाल धूल के बादल उठने लगे। लेकिन जितना आगे वह दौडता गया सूर्य उतना ही पीछे हटता गया और रेगिस्तान लाल रग से हल्के सफेद रग मे वदल गया। फिर भी, अव शेर एक झील पर पहुँचा—वह उन झीलो मे से एक थी जो रेगिस्तान के मोती कहलाती है क्योकि वे वडी साफ और आकर्पक होती है। आकाश मे अन्तिम गुलावी वादल की छाया झील के नीले वक्ष पर लहरा रही थी। इसलिये शेर वही रुक गया और खुश हो वोला आहा हा, मेरा शिकार तो यहा

मौजूद है ।" एक छलाग मे वह झील के अन्दर था और वही डूब कर वह अपनी मौत से जा मिला। लेकिन अपनी अन्तिम सास छोडने के पहले उसने कहा "इससे बेहतर मौत मुझे क्या नसीब होती कि मरीचिका के पीछे दौड़कर मै खत्म हो रहा हूँ।"

११. शैतान की मौत

एक गाडी किसी सडक पर जा रही थी। एक साँप ने सोचा कि उसे रोक दे। लेकिन चूँकि माल से भरी हुई गाडी को रोकना सरल नही था इसलिए उसने एक मेढक से सहा-यता माँगी और कहा, "यह एक जबरदस्त टक्कर है और यो चुपचाप इसे करना सभव नही है इसलिए मुझे तुम जैसे मशहूर तबलची की आवश्यकता है।"

मेंढक तो यह सुन कर फूला न समाया। जब मालगाडी समीप आई तो उसने अपने आपको खूब फुला लिया और जितने जोर से टर्र-टर्र कर सकता था करने लगा। उसकी टर्र-टर्र से साँप को भी जोश आया और वह क्रोध मे पागल होकर सडक के बीचो-बीच गाडी रोकने के लिये लेट गया। दुर्भाग्य की बात कि गाडी आई और उस पर से गुजर गई, साँप वही पर ढेर हो गया। लेकिन मेढक का इसका पता न चला और वह जोर के साथ टर्राता रहा।

यहाँ तक कि चिडियो का एक झुण्ड नीचे उतरा, उन्होने साँप को खा डाला और रणभूमि को बिल्कुल साफ कर दिया लेकिन मेढक था कि टर्राये जा रहा था और जितना ज्यादा वह टर्राता गया चिडिया उतनी ही वेचैन होती गई और उन्होने कहा "चलो इसे भी ठिकाने लगा दें, कैसा शोर मचाये जा रहा है यह।" इस

प्रकार मेढक को चिडियो ने जिन्दा खा लिया हालाकि वे उसे युद्ध अपराधी नही मानती थी ।

तमाम शैतानी कोलाहल और कविताएँ उन अत्याचारियो की भाँति समाप्त कर दी जानी चाहियें जो लोगो के अधिकारो को छीनने के लिए इस्तेमाल होती हैं ।

१२. कायर की वीरता

एक लोमड़ी गाँव मे घूमती-घूमती एक अच्छे खासे चौडे गढे के पास आई। अपनी हुनरमदी जाँचने के लिए उसने उस गढे को एक छलाँग मे पार करना चाहा लेकिन वह अपने आपको जितनी हुनरमद समझती थी असल मे उससे आधी भी न थी। इसलिये जब वह कूदी तो गढे के बीच मे गिर पडी और कीचड मे गहरी धँस गई। उसने वहाँ से निकलने के लिए बहुत हाथ-पाँव मारे लेकिन असफल रही। अब उसने पूरी शक्ति से चिल्लाना शुरू किया और यह समझी कि उसका शोर सुनकर सारे पहाड, जगल और आस पास की प्रत्येक चीज़ घबरा जायगी और उसे कीचड मे से निकलने मे मदद देगी। लेकिन वह चिल्लाती रही और किसी के कानो पर जूँ तक न रेंगी। पहाड और जगल खामोशी के साथ उसे देखते रहे बल्कि कुछ मुस्कराते भी रहे। अब लोमडी को अक्ल आई और उसने सोचा कि वह चुप होकर पहले तो अपनी गलतियो को देखे। और फिर कहा, "मै कुछ धीरे भी तुम्हे पुकार सकती हूँ लेकिन तुम कर क्या सकते हो ?" फिर भी कोई जवाव न मिला। आखिरकार लोमडी ने हाथ-पैर चलाना वद कर दिये और अपने आपसे बोली, "कोई वात नही, मुझे यही तसल्ली है कि मै वीरता के साथ कीचड मे फँस गई।"

आप इस प्रकार के प्राणी से चाहे दोस्ती न करे लेकिन उसके हाल पर गौर करने में क्या हर्ज है। उसे जितनी वडी हार हुई वह उतने ही जोर से चीखी लेकिन आखिर में खुद चुप हो गई और अपने आपसे वातें करने लगी।

१३. शत्रुता का फल

एक था सूअर। उसे अपनी शक्ति पर इतना विश्वास था कि वह वह सबको मार डालना चाहता था। उसने सारे जगल मे अधा धुंध दौडना शुरू किया लेकिन वह था बडा अभागा। पहले पेड को जो उसने टक्कर लगाई तो उसकी खाल छिल गई और दूसरे ने उसका एक दाँत तोड दिया। ऐसी हालत मे एक हट्टे-कट्टे आदमी को सिवाय क्रोध के क्या आ सकता था। चुनाचे क्रोधित सूअर ने ऐलान कर दिया कि सारा जगल उसका शत्रु है। उसने एक-एक वृक्ष पर हमला किया—किसी को सिर से टक्कर देता, किसी पर अपना वजन दे मारता, किसी को काटता तो किसी को लात से मारता। उसकी आँखो से आग के शोले भडकते और सारा जगल उसके शोर से कांप उठता। ऐसा मालूम होता जैसे असल मे कोई लडाई छिड गई हो। लेकिन उसे यह देखकर अपार दुःख हुआ कि उसका सारा शरीर जख्मो से छलनी हो गया था और वह बुरी तरह परास्त हो गया था। लेकिन अपनी पराजय को स्वीकार करने वाला वह न था। उसने निश्चय किया कि कम से कम एक वृक्ष की चोटी को जब तक वह न तोड सकेगा उसका गुस्सा शांत न होगा। एक उडान में वह ऊपर को उछला लेकिन दुर्भाग्यवश पास के एक दरख्त ने अपनी एक शाखा शरारतन उसके पेट मे भोंक दी और सूअर बेचारा

लटक गया हवा मे। अब नीचे उतरना तो मुहाल था ही इसलिए वह लालटैन की तरह वही टगा रहा।

इसके बाद यह लडाकू सूअर वहाँ से फिर कभी नीचे न उतरा। सूअर के झगडालू स्वभाव के कारण सब उसके शत्रु बन गए और वह हार झक मारकर यो ही रह गया।

१४. खूनी की चालाकी

एक बार जब पहाड बर्फ से बुरी तरह ढँका हुआ था तो एक भेडिया भूखे पेट घूम रहा था। भूखो रहना उसे पसन्द नही था इसलिये हालाँकि उसे किसानो की लाठियाँ और दूसरे कटु अनुभव याद थे फिर भी उसने साहस बटोरा और पहाडी मे नीचे गाँव मे जाकर एक मुर्गी पकडने का निश्चय किया। इस बार वह ऐसी तेज रफ्तार से भागा कि मार-पीट से बच गया। इसलिये बडे खुशी-खुशी उसने वापस आकर अपने आप मे कहा "डरने की कोई बात नही ! मुझे कोई नही पकडेगा। अब तुम मुझे पकडोगे, ऐं ? हाँ, हाँ मैंने—भेडिये ने यह सब किया है—मैंने ही दिन दहाडे डाका मारा है ! यह हमेशा मे मेरा पेशा रहा है !" अब भेडिये ने सोचा कि वह सच्चा है इसलिए उसमे कुछ निडरता आ गई। वह बडी हिम्मत के साथ मुर्गी को मुँह मे दबाये पहाड पर चढ गया और बडा मजा लेकर उसने उसे खा लिया।

अचानक उसे एक खरगोश ने घेर लिया, उसने बर्फ पर खून की एक लकीर और अपने कदमो के निशान देखे। वह घबरा गया क्योंकि वह निशान उसके लिए कष्टकर और खतरे की सूचना थी।

"गुनाह के सबूत तो साफ दिखाई दे रहे है," उसने घबराते हुए कहा। "अगर कही उन्होने मेरा पीछा किया तो मै तो कोई बात भी नही बना पाऊँगा। सबसे अच्छी बात है भागो ही नही।'

यह सोचकर भेडिया चिल्लाता हुआ घाटी की ओर दौडा। "इधर देखना जरा! इन लोगो ने मेरी इज्जत मिटाने के लिए अफवाह उडा रखी है।"

साथ ही उसने मुँह से खून की लकीर और कदमो के निशान मिटाना शुरू कर दिये। लेकिन जितना ज्यादा वह उनको मिटाता वे और ज्यादा चमकने लगते क्योकि भेडिये के जबडे खून से लिथडे हुए थे और उन्हे पोछने का उसे समय ही न मिला था।

१५. बगुला भक्त

एक बार एक लोमडी ने अपने मुँह में एक बिगुल बाध लिया और दुम में एक जलती हुई लकडी लटका ली। जब उसने देख लिया कि वह सुरक्षित है तो वह एक खुले मैदान में जाकर दौड लगाने लगी और अपनी बिगुल में से चिल्लाने लगी, "आग लगी है, बचना भाई, बचना ! विद्रोहियो को आग मत लगाने दो !" और साथ ही वह जलती हुई लकडी से हरेक चीज को आग लगाती जा रही थी।

इस महान कारनामे को सुनकर दूर और नजदीक के देहाती दौडे-दौडे उस जगह आ पहुँचे और सबके सब भौच-क्के देखने लगे। और जब लोमडी ने देखा कि वह अपने काम में सफल हो गई है तो वह बडी खुश हुई और लोगो को अपना यह सबक समझाने लगी

"देशवासियो ! मेरे इस खेल का नाम है
जहाँ कही शोर सुनो "आग को रोको"
वही आग फैल जाये।"

१६- अन्ध-विश्वास

एक दिन जब कुछ खरगोशो को जो एक पहाडी पर रहा करते थे ? यह खुशखबरी मिली कि भेडियो के पहाड का राजा उनसे मिलने आने वाला है तो वे खुशी से नाचने लगे। खरगोशो के लिये यह एक बहुत बडे गर्व की बात थी।

वे अपने बिलो से निकल कर आये और आपस मे खुशी के समाचार सुनाने लगे। उन्होने राजा का ऐसा शाही स्वागत करने की तैयारियाँ की और ऐसा उत्सव मनाने का निश्चय किया जिसकी मिसाल पहले कभी न मिली हो। उन्होने कहा, "यह एक ऐतिहासिक अवमर है जो हमारी सतान के लिये असीम सुख प्रदान करेगा।"

और आखिरकार भेडिया राजा आ पहुँचा और खरगोश बूढो को सहारा दिये, बच्चो को सम्भाले हुये रास्ते के दोनो ओर खडे हो गये। वे उसे दुआएँ देते रहे और भावुकता मे डूबे बडी जिज्ञासा से उसे घूरने लगे। भेडिया राजा ने भी उन्हे झुक कर अभिवादन किया और उन्हे आश्वासन देते हुये एक घोषणा जारी की।

फिर भी जब सारी रस्मे खतम हो चुकी तो भेडिया राजा ने ऐलान किया कि यह बडी अच्छी जगह है इसलिये वह वहा एक सफरीलॉज बनवा देगा। तुरन्त सारे खरगोश उस कार्य मे जुट गये और अपने घर तोड फोड कर राजा की सेवा के लिये तैयार हो गये। और चूँकि भेडिया राजा अपना बिस्तर या कपडे नही लाया था इसलिये खरगोशो ने उसे बहुत सा

महीन रोवाँ जमा करके दिया और प्रार्थना की कि वह उसे स्वीकार करे। जाहिर है उसके पास खाने-पीने की भी कोई सामग्री न थी लेकिन सौभाग्यवश यहाँ हर साल खरगोश के मॉस की बहुत सी मात्रा होती थी जो फौरन वहाँ लाकर रखी गई जिसके लिये उसे कोई पैसा खर्च न करना पडा और इस प्रकार आने-जाने का खर्च भी बच गया।

हालात बहुत जल्दी बदल गये। वे स्वागत के समय निकली हुई आवाजे और हर्षमय उद्गार अब दयापूर्ण करा हटो में बदल गये और सुख समृद्धि के बजाय वे बडी विपदा मे फँस गये और भारी खतरा उनके सिर पर मँडराने लगा। यहाँ तक कि उनके सुयोग्य प्रतिनिधि भी न बच सके। लेकिन आखिर ये प्रतिनिधि थे तो असाधारणतया बुद्धिमान लोग इस लिये अपने लबे कानो को झटका देखकर बडे दुख के साथ उन्होने कहा —

"ऐसे चालाक लोगो से हमारी तरह पहले ही कुछ साव-धानी से क्यो नही काम लेते ?"

अत्याचारी और हमलाकर लोगो को जो सम्मान देते है, उससे जनता को केवल गरीबी और मुसीबते मिलती है।

१७. खूब मदद की

एक वत्तक के बच्चे का उसके भाइयो से झगडा हो गया और उन्होने उसे निकाल बाहर किया। वह घास पर पडा अकेला फूट-फूट कर रो रहा था कि अचानक उधर से एक नीवला गुजरा और उससे बोला

"ऐ नन्हे, ऐसा फूट-फूट कर क्यो रो रहा है रे ? तू तो बिल्कुल राजकुमार लगता है। कही राजगद्दी हथियाने के सिल-सिले में तुझे दूसरो ने मार तो नही भगाया ?"

वत्तक के बच्चे ने सोचा नीवला कहता तो सच है, इस लिये उसने जवाब दिया। "आपने ठीक फरमाया साहब, मैं ही वास्तव मे राजकुमार हूँ वे सब तो ढोगी है लेकिन उन लोगो ने जनता के विद्रोह से फायदा उठाया और · ··· ।"

"मेरा अनुमान ठीक ही था ? तो तुम हारे हुए राजकुमार हो। भई, यह बडे दुख की बात है। अच्छा तो तुम मेरे आगे-आगे चलो मैं विद्रोह को दबाने मे तुम्हारी मदद करूँगा ताकि तुम जायज तौर पर राजा बन सको।"

बत्तक के बच्चे को तो ऐसी खुशी हुई जैसे वह वास्तव मे राजकुमार हो। वह लडखडाता हुआ नीवले के साथ चल दिया ताकि अपने भाइयो को दबाकर राज्य उनसे छीन ले।

लेकिन कुछ ही कदम चला होगा कि नीवले ने उसे झपट कर दबोच दिया। बत्तक का बच्चा परेशान हो चीखने लगा मानो कह रहा हो

"ओह तुम तो साम्राज्यवादी हो, तुम नीवले हो।"

"तुम भी अच्छे मसखरे हो। अरे इतनी देर से मै तुम्हे फुलसा रहा हूँ और तुम समझ ही न सके कि मै कौन हूँ।" बत्तक के बच्चे को वह चबाने लगा और उसकी आवाज कुछ मन्यम पड गई।

१८. नाच न जाने आंगन टेढ़ा

एक खरगोश के पीछे लोमडी दौडी लेकिन खरगोश इतनी तेजी से भागा और अपना पीछा करने वाले के इर्द गिर्द उसने ऐसे चक्कर काटे कि लोमडी उसे न पकड सकी। जब लोमडी दौड-दौड कर पसीने मे शराबोर हो गई और उसका सिर चकराने लगा, उधर खरगोश एक कटीली झाडी मे जा छिपा और वहा जान-बूझ कर रुक गया और लोमडी को ललचाने गा। लोमडी उछली, उसे यह सूझा ही नही कि झाडी उसे काँटो मे उलझा लेगी और वहाँ हवा मे लटक जायगी और खूनाखून हो जायगी।

गुस्से से वह लाल-पीली हो गई और उसने खरगोश को जितनी गालियाँ वह जानती थी दी · "अबे बदमाश कही के, काँटो पर इतना इतराता है! अबे खून के प्यासे अत्याचारी! अबे लुटेरे इन्सानो की मुसीबतो और विपदाओ से फायदा उठाता है! अबे नास्तिक ·· · ।"

खरगोश कभी का वहाँ से खिसक चुका था और अब बडी दूर जाकर उसने अपना मुँह फेरा और कहा, "और कुछ? तुम वास्तव मे बहुत बडी साहित्यकार हो? ये सब चुटकले तुम्हारा इतना सुन्दर वर्णन करते है और ये ही शब्द उस गुण्डे के लिये इतने ही ठीक है जो एक खरगोश को नही पकड सकता। अच्छा सलाम भाई, सलाम!"

१६. शैतानी का फल

नदी के किनारे तख्तो का एक ढेर जमा था जो नाव मे रखकर शहर मे बेचे जाने वाले थे। एक बन्दर को तख्ते की बडी सख्त जरूरत हुई, वह उससे कई काम निकाल सकता था। अब उसने सोचा क्या तरकीब की जाय जो एक तख्ता हाथ लगे और कहा, "चुरा तो मै सकता नही क्योंकि इस जरा से काम के लिए कौन जान जोखो में डाले। वैसे तो मै एक आसानी से निकाल सकता हूँ लेकिन लोग मुझे चार कहेगे और वह कोई अच्छी बात नही है। तो ऐसा करूँ यहाँ लुक कर बैठ जाता हूँ जब सब के सब चले जायेंगे तो चुपके से एक तख्ता ढेर मे से निकाल कर पानी मे फेंक दूँगा और उसे ढूँढने के लिए खुद कूद पडूँगा। तब लोग समझेगे यह मैने खुद खोज निकाला है और वे कुछ नही कह सकेगे। बस यही ठीक है।"

इस प्रकार जब सब वहाँ से चले गये तो बन्दर ने एक तख्ता निकाल कर नदी मे फेक दिया और उसके पीछे खुद भी कूद पडा। लेकिन वह तैराक नही था और नदी एक तो बहुत गहरी थी दूसरे उसका बहाव बडा तेज था इसलिए तख्ते से चिपटा हुआ वह मझधार मे हाथ पैर फटकारता रहा। कभी वह तख्ते पर होजाता और कभी तख्ता उसके ऊपर। दोनो एक दूसरे के ऊपर तले होते हुए नदी के वहाव के साथ बहते चले गये। किनारे तक पहुंचने का उसे मौका ही न मिला। आखिरकार, चूँकि उसने वहुत ज्यादा पानी निगल लिया था

इसलिए उसने तख्ते को छोड दिया। फिर वह नदो के धरा-तल पर डूबा और मर गया।

इस कहानी से साम्राज्यवादियो का स्मरण हो आता है जो अपनी चालाकी मे बहुत यकीन रखते है। जिस देश पर उन्हे हमला करना होता है वे उसे पानी मे ढकेल देते है और फिर उसे बचाने की तिकडमे करते है और सोचते है कि इस तिकडम से वह देश उनका हो जायगा। लेकिन फिर भी नतीजा उनकी असफलता ही मे निकलता है। अनेक सघर्षो और लडाईयो के बाद वे हार-झकमार कर उसे हाथ से जाने देते है बल्कि उसे जाने ही नही देते खुद भी उसके साथ मौत के घाट उतर जाते है।

२०. षडयंत्र का भेद खुला

एक भेडिये ने जब यह सुना कि एक लकडहारा पहाड की ओर आ रहा है तो उसने अपनी योजना बयान करते हुए एक कविता रची –

इस बार मै अक्ल से लडूंगा ताकत से नही,
क्योकि मै विद्वान भेडिया हूँ।
पहले तो उससे रखवा लूंगा हथियार,
और फिर कर दूंगा उसे साफ ॥

इसलिए वह अपने कूल्हो के बल निश्चल हो बैठ गया जैसे कोई बडा लकडी का गट्ठा पडा हो और सुहावने मौके का इन्तजार करने लगा।

इतने मे लकडहारा आ पहुँचा। उसने पहाड़ की ओर देखा और एक दम गीत गढ लिया।

ओहो! क्या गट्ठा पडा है
दूर से देखो तो गट्ठा
और गट्ठा हो नजदीक से भी
लगाऊँ एक कुल्हाडी!
और उड जाएँ इसके परख ये

जब भेडिये ने यह सुना तो चपत हो गया। शत्रु की साजिश को खोल देना उसे खत्म कर देना।

२१. साहस की विजय

एक रीछ पहाड की चोटी पर घमण्ड और ढीठता भरी सूरत बनाये ऊकडूँ बैठ गया । उसकी इस हरकत से चीता, तेदुआ, भेडिया और सूअर सब लाल-पीले हो उठे और साथ ही उन्हे कुछ डर सा लगा।

उन्होने कहा, इससे निपटना टेढी खीर है भैया । उसे जीतने का एक ही तरीका है कि एकदम उस पर धावा बोल दो ।" वे सब एक दूसरे से गुप्त रूप से मिले और उसे नष्ट करने का तरीक़ा सोचा । पहले तरीका तो यह तय पाया कि पहाड के आस-पास उन्होने एक गहरी खाई खुदवाई जिसमे उन्होने नुकीली लकडियाँ लगा रखी थी । इस प्रकार यदि वे रीछ को घेर कर वहा ले आते तो वह वह मौत का प्यारा हो जाता ।

जब सारी तैयारियाँ हो चुकी तो उन्होने एक चिडिया को रीछ के पास भेजा और उसे एक भोजन पर दावत दी । उससे कहलाया गया कि उन लोगो ने एक लोमडी मारी है और वे तब तक उसे खाना शुरू नही करेगे जब तक वह न आ जाय । लेकिन रीछ नें कोई उत्तर न दिया ।

जब वे देर तक उसकी राह देखते रहे और वह न आया तो वे समझ गये कि उनकी पहली कोशिश विफल हो गई है । चुनाँचे उन्होने एक और चाल चली । इस बार उन्होने जहर के कारण मरने का बहाना बनाया और सब के सब लेट गए ।

उन्होने चिडिया को रीछ के पास इसकी सूचना के लिए भेजा कि वे सब मर गए है लेकिन उन्होने ढेरो जायदाद छोडी है। जिसका अधिकारी वही है। अब भी रीछ चुप रहा।

इस बार भी असफलता का मुँह देखने के बाद उन्होने तीसरी चाल चली। उन्होने फिर चिडिया से यह कहलवाया कि पहाड ज्वालामुखी है जो फटने वाला ही है और अगर रीछ वहाँ से न हटा तो वह भस्म हो जावेगा। लेकिन रीछ कुछ कहने के बजाय केवल हँस दिया।

अब जबकि उनकी सारी कोशिशे नाकाम रही थी चीता वगैरह सिवाय इसके क्या कर सकते थे कि जोर-जोर से रीछ को गालियाँ कोसने दे और रीछ को वहाँ से बुलाले। लेकिन रीछ ने उनकी तरफ देखे बिना ही अपने आपसे कहा, "इन्होने अपनी अक्ल तो सारी बेच खाई और अब सूखे टुकडो पर कौवे पकड रहे है।"

जो व्यक्ति शत्रुओ की ढोगपूर्ण भलमनसाहत से सहज प्रभावित नहीं होते वे शत्रुओ द्वारा लगाए गए जाल मे कभी नही फँस सकते।

२२. कमजोर और ताकतवर का मेल

एक मासूम मेमना बेचारा दुर्भाग्य का मारा एक शेर के हाथ पड गया और गिडा-गिडा कर उससे प्राणो की भीख मागने लगा। आखिरकार शेर को उस पर दया आई और उसने उसे छोड दिया। लेकिन मेमना फौरन वहाँ से भागा नही। उसने सोचा जब शेर ने इतनी दयालुता दिखाई है तो जरूर उसे मुझसे कुछ लगाव हो गया है इसलिए उसने साहस बटोरा और इस आशा मे कि शेर उसे अपना धर्मपुत्र बना लेगा वही बैठा शेर की राह देखने लगा फिर जब शेर अपने शिकार की तलाश मे घूमता फिरता फिर वहाँ आया और उसने देखा कि मेमना अभी तक वही मौजूद है तो एक ही झपट्टे में उसे निगल लिया।

२३. व्यर्थ की लड़ाई मोल ली

तीन आदमियो ने एक शिकारी बन्दूक ली और एक पहाडी पर रीछ मारने के लिए गए। चूँकि वे बहुत बहादुर थे जैसे ही उन्होने एक रीछ को पहाड की चोटी से कही दूर बैठा हुआ देखा तो खुशी से चिल्ला उठे "जल्दी करो! वर्ना कही वह भाग न जाय!"

वे तीनो कुछ-कुछ फासले से पहाड पर दौडे, लेकिन रीछ भी उनकी तरफ बढने लगा और ज़रा देर मे कोई आधे रास्ते में आ गया। एक बारगी तो वे चकित रह गए लेकिन फिर उत्तेजित हो बोले।

"बहुत अच्छे! तो वह हम पर चढा आ रहा है, हम भी उस पर हमला करेंगे।"

एकदम उन्होने फायर किया लेकिन जब मुडकर देखा तो रीछ मुडकर उन्ही के पीछे आ रहा था। उन्होने एक दूसरे की ओर देखा और हक्के बक्के रह गए। फिर जल्दी मे कहा, "हम उसके सामने भागे जा रहे है और वह हमारा पीछा कर रहा है।

फिर वे दुबारा घूमे और रीछ से मुठभेड करने की ठानी लेकिन रीछ अचानक बीच मे ही रुक गया और ऐसा लगा जैसे वहा बैठा उनकी इन्तजार करता है। यह देखकर वे भी रुक गए। "यह गलत है!" उन्होने कहा "वह हमारी राह देख रहा है, क्या हम उसे छेडे।"

उन्होने बिल्कुल निश्चल होकर उसी तरह तनाव की स्थिति मे रीछ को देखा जिस तरह रीछ ने उन्हे देखा और उनका यह घूरना काफी देर तक होता रहा। फिर तो वे दुबारा भिड गये और कहा, "अब तो भई वह हमारे बिल्कुल सामने आ गया है क्यो न हम अपनी गोलियाँ उसी पर दागे ?"

उन्होने एक साथ अपनी बन्दूके उठाई, निशाना साधा और गोली चला दी। लेकिन जाहिर है रीछ भी तैयार था ही वह भी मैदान मे आ गया और कभी वह पूर्व मे भागता, कभी पश्चिम मे यहाँ तक कि सारा पहाड रीछो की भगदड से भरा-सा लगने लगा और उनके सारे निशाने चूक गये। जब उन्होने अपनी बन्दूके नीची की तो देखा कि रीछ उसी तरह बैठा हुआ है जैसे पहले बैठा था।

"अरे यह तो हिलता ही नही, एँ ?" वे बोले ऐसा करे इसे घेर कर एक तरफ खेद दे फिर हम लोग बिखरकर उसे दबोच लेगे।"

वे दाये-बायें छँट गये और ऐसा नक्शा बनाया कि काम पडने पर एक दूसरे की सहायता कर सके और रीछ को कही से भी न भागने दें। फिर भी दूसरी बार भी उन्हे ऐसा लगा जैसे रीछ अलग-अलग उन पर हमला कर रहा है और वे उससे ऊपर अपनी जानें बचाने के लिये अधाधुध भाग रहे है। आखिर मे वे फिर पहाड की चोटी पर आकर मिले लेकिन अब रीछ पहाड के नीचे पहुँच चुका था मानो उन्हे

उनका रास्ता रोके हुये हो। अब सिवाय इसके कि वे किसी तरह भाग निकले कोई चारा नही था और अब हो गई थी शाम।

वापस आते हुए तीनो शिकारी बडी थकावट और पीडा महसूस कर रहे थे।

"हमने दिन भर उसका पीछा किया और नतीजा सिफर, एक ने कहा। "और फिर कितने खतरे मोल लिये। ऐसा लगा जैसे हम रीछ का शिकार नही कर रहे बल्कि वह हमारा शिकार कर रहा था। यह वास्तव में असहय अपमान है।"

"अगर अपमान ही होता तो कोई बात न थी, "दूसरे ने कहा "लेकिन भय तो यह है कि अब हमारी तकलीफो का कोई अन्त नही। देखो न अब हमने उसे छेड दिया है वह हमे चैन न लेने देगा। हमारा अब चिन्तित होना बिल्कुल उचित है।"

"चलो जल्दी से भाग निकले। तीसरे ने सुझाया। "कही हमारा पीछा तो न कर रहा हो।"

यह मूर्खों की अदूरदर्शिता का प्रमाण है जो व्यर्थ ही लडाई में कूदते है और जाते समय तो बडे सिर उठाकर जाते है लेकिन आते वक्त दुम दबाकर आते है।

२४. झगड़े का फैसला

दो बन्दर आडू के एक बाग में घुस गये। पहले तो उन्होंने अपने ही लिये एक प्रतिबन्ध लगाया। "अपन तो बन्दरो में चोरी की प्रथा खत्म करना चाहते है ना ?" उन्होंने कहा। "लेकिन जब तक हम बन्दर खुद अपने आपको न रोकेंगे कुछ नही हो सकता। ऐसा करे तुम मेरी निगरानी करो और मैं तुम पर नजर रखता हूँ, इस प्रकार अगर हम चुराना भी चाहेगे तो भी नही चुरा सकते।"

और बस यही बीडा उन्होंने उठा लिया।

जब दूसरा बन्दर जरा चूका कि एक ने मौका देखकर एक आड़ू तोड लिया। झट उसे मुँह मे ठूँस कर वह मुडा और दूसरे बन्दर को देखने लगा।

दूसरा बन्दर भी कुछ कम न था। जब पहले ने आडू तोडा और मुँह फेरा था तो उसने भी एक आड तोड लिया था। उसे मुँह में भरकर वह भी अपने साथी को देखने लगा।

इस तरह दोनो बन्दर आडू मुँह मे ठूँसे हुये खामोशी से एक दूसरे को तकते रहे।

लेकिन जरा देर मे ही दोनो का भडा फूट गया। एक ने गुस्से से दूसरे की ओर इशारा करते हुये नाक में कहा, "देखो तुम तुम "

उसी क्रोध से उगली उठाते हुये।

"और तुम " दूसरे बन्दर ने भी नाक से कहा।

प्रत्येक समझ गया कि दूसरा घृणा के योग्य है, लेकिन फिर भी दोनो बडे हास्यास्पद लग रहे थे। इसलिये जो भी दोनो एक दूसरे को उलाहने देना चाहते थे पर उसके बजाय जोर से हँस पडे। फिर प्रत्येक के मुँह मे से एक-एक आडू बाहर निकल पडा।

अब तो दोनो बन्दरो ने कहकहे लगाते हुये अपने आडू उठाये। फिर दुबारा एक दूसरे को तकने लगे और एक साथ गाने लगे।

"कुछ तुम समझे।
कुछ हम समझे।
बस समझा नही सकते हा हा।"

गाने के बाद वे एक दूसरे के आगे झुके, हरेक ने आड मुँह मे सरकाया और धीरे-धीरे चबाते हुये कहने लगे। "अहा, कितने मजे मे हमने अपनी छोटी-सी तकरार तय कर ली।"

२५. भलाई का ढोंग

कुछ बन्दर एक सडक पर चले जा रहे थे कि उन्हे एक लाश नजर आई जो फटे-पुराने बोरिये मे लिपटी हुई वहाँ पडी थी।

बन्दरो के सरदार ने अपना सिर हिलाया और कहा, "वह देखो, कितनी बुरी बात है। मैं हमेशा कहता रहा हू जिन्दगी तो होती ही है और जब कोई मर जाता है तो उसके बाद कुछ भी नही होता। यही एक ऐसा मामला है जहाँ आदमी अपने को खुश कर सकता है। फिर भी, हमने माना कि मृत्यु के साथ हर चीज का अन्त हो जाता है लेकिन लाश को तो पहाडी पर दफना देना चाहिये, है न माकूल बात! लेकिन मर जाने पर कौन इन बातो मे पडता है इसलिये, हम इसे उठाकर पहाडी पर ले चलते है।"

सब बन्दर लाश के गिर्द जमा हो गये और हरेक ने चटाई का एक-एक कोना अपने पजो मे दबाकर उसे उठाने की कोशिश की। वे दो पक्तियो मे बट गये और मजबूती से चटाई को दबा कर ले जाने लगे। आखिर कार वे पहाडी पर पहुँचे और वहाँ जाकर उन्होने चटाई को रख दिया। फिर कुछ मिनट तक वे सिर झुकाये शोक में खडे रहे। इसके बाद उन्होने कुछ मिट्टी ली और उसे चटाई पर फेका, और जब वह दफना दी गई तो वे सब चले गये।

फिर भी लाश उसी तरह सडक के किनारे पड़ी रही। और अब चूँकि चटाई वे ले गये थे इसलिये वह बिल्कुल खुली हुई वहाँ पडी थी।

२६. मुर्दों का देश

एक लोमडी कुछ खरगोशो के खेत मे घुस गई। चूँकि खरगोश बिना किसी कारण के उछलते हुये भागने लगे तो लोमडी ने उनका पीछा किया और किसी तरह दो-चार को खा ही गई। यह हरकत उसके लिये फायदेमद सिद्ध हुई इसलिये कि अब वह स्थान शान्त हो गया था और लोमडी पेट भर कर खा चुकी थी। जब उसने खेत को जाँचा-परखा तो वह बडी प्रसन्न हुई और सिर हिलाकर बोली, "यह वास्तव मे यथा नाम तथा गुण जैसा ही प्रदेश है बडा ही बढिया। सुन्दर दृश्य है, अच्छी उपज है और मैत्री पूर्ण निवासी वास करते है।"

लेकिन कुछ देर घूमने-फिरने के बाद लोमडी को वह जगह बडी उक्ता देने वाली दिखाई दी। "बडी बकवास है यह जगह बहुत ही बुरी।" उसने साँस लेकर कहा। "कही जिन्दगी का तो नाम-निशान तक नही है, और सारा प्रदेश सुनसान जगल-सा लग रहा है। सिवाय मुर्दो की हड्डियो और नाश के लक्षणो के कुछ दीखता ही नही, जिधर देखो लाशें बिखरी पडी है, गाडी भी तो नही गई।"

लोमडी के लिये वह भयानक दृश्य असह्य हो गया। उसके हृदय में अपार दया उमड आई। उसने अपने ही हाथो खरगोशो की हड्डिया जमा की, एक कब्र खोदी और उन्हे गाड दिया। फिर यह महसूस करते हुये कि उसने एक भलाई

की है, वह सिर हिला कर कहने लगी "मै समझती हूँ मुझे आपको वधाई देनी चाहिये। कम से कम मैंने लोगो को आराम-घर मे तो लिटा दिया, अव वे मेरी वडाई के गीत गायेगे।" चुनाचे उसने एक तख्ती वहा लगा दी जिस पर यह अंकित था, "सद्‌गुणी सरकार की स्मृति मे।"

वापस आते समय लोमडी ने एक क्षण के लिये कुछसोचा और फिर कहा ,"जो कुछ होना था मैंने सब कर दिया है और मै वास्तव मे जन-पिता हो चुकी हूँ। मै यहा वहुत ही तुच्छ मजूरी के लिये आई थी और अव खाली हाथ घर जा रही हूँ।"

२७. तकिया ने नींद हराम कर दी

एक लोमडी ने एक मुर्गी पकडी और उसे अपने बाडे मे ले गई जहाँ उसने उसके पर तो नोच डाले मगर उसे खाया नही। "मै इसे किसी खास मौके के लिये रख छोडती हूँ," उसने अपने आपसे कहा। "अभी मै ठीक हुये जाती हूँ और फिर सो जाऊँगी।" मुर्गी को तकिया बना कर वह लेट गई।

लेकिन बडी कोशिशो के बाद भी उसे नीद न आई। इसलिये वह उठ बैठी और मुर्गी को लेकर कहने लगी, "यह तकिया कुछ ज्यादा नर्म है इसलिये मुझे नीद नही आती। अगर मै इसकी चरबी का हिस्सा और सारे गोश्त का (जिसमे चर्बी न हो ३/१० हिस्सा खालूँ तो फिर यह ठीक हो जायगा।" चुनाचे उसने एक छोटा टुकडा उसकी पीठ में से उतारा और खा गई। और फिर लेट गई। लेकिन अब भी वह न सो सकी क्योकि अब तकिया बहुत सख्त हो गया। एक बार फिर वह उठ बैठी और कहने लगी, अभी कुछ ज्यादा गोश्त निकाल लिया था मैने अब ठीक किये देती हूँ। "चुनाचे उसने सारे गोश्त का बाकी ७/१० और चर्बी का ३/१० हिस्सा खा लिया और खा चुकने के बाद सोने के लिये लेटी लेकिन तीसरी बार वह फिर उठी और कहने लगी अब भी यह ठीक नही हुआ। पहले जब मेरे पास कोई तकिया न था मै सुबह तक तान के सोती थी।" अन्त मे मुर्गी का जो कुछ मास बचा था उसने वह भी चट कर लिया फिर पेट पर हाथ फेरते हुये वह लम्बी हुई और वास्तव मे सुबह तक सोई।

२८. धन वालों का कानून

खरगोश अपने घर में आजादी से रहे और कोई बाहर का जानवर उसके काम मे दखल न दे इस अधिकार को स्वीकार करते हुये साँप ने एक कानून बनाया और खुद जाकर खरगोश को इसकी सूचना दी ।

उसने कहा, "सुनो, भविष्य मे यदि मैं मनमाने तौर पर बिना प्रार्थना पत्र दिये और तुम्हारी आज्ञा लिये तुम्हारे घर मे घुस आऊँ तो तुमको अधिकार है कि मुझसे आकर इसकी शिकायत करो ।"

हालाँकि साँप ने इस कानून की घोषणा तो कर दी थी फिर भी उसे अभी खरगोश के कानून समझने के बारे मे सन्देह था और साथ ही उसे यह शक भी था कि कही खरगोश उसके विश्वास की कमी को फौरन न समझ जाय । इसलिये उसने खरगोश की परीक्षा लेने का निश्चय किया ।

जान-बूझ कर बिना प्रार्थना-पत्र दिये साँप फुर्ती से खरगोश के विल मे घुस गया और उसने खरगोश के एक वच्चे को मार डाला फिर एक दम वहाँ से जाकर वाहर दरवाजे पर वैठ गया और खरगोश के आने और शिकायत की इन्तजार करने लगा । वह वडी देर तक उसकी राह देखता रहा लेकिन खरगोश तव भी न आया । और इधर साँप का पारा हर क्षण चढता जा रहा था । वह दुवारा खरगोश के विल मे घुस गया, उसने खरगोश को पकडा और गरज कर उससे कहा ।

"तुम कानून का पालन क्यो नही करते ?"

"किस कानून का पालन आप मुझसे करवाना चाहते है और किसके लिये ?"

"तुम हमारे पास फरियाद लेकर क्यो नही आये !"

"अभी गुण्डे भी तुम ही थे, और अब मुन्सिफ भी तुम ही बन बैठे हो। अब मुझे बताओ मै किस गुण्डे को पकड़ूँ और कौन से मुन्सिफ से फैसला कराऊँ ?"

"सी सी सी !" अब तो साँप अपना क्रोध न रोक सका, एक ही ग्रास मे उसने खरगोश को चट कर लिया।

जब साँप ने खरगोश को खा लिया तो उसने यह आम एलान कर दिया। "इस बार मैने खरगोश को जिस तरह खाया है वैसा पहले नही खाया था। यह कानून के अनुसार था और सारी कार्यवाही—गिरफतारी से लेकर दण्ड-देने तक—पूरी तौर पर अमल मे लाई गई थी।"

२६. उदार अत्याचारी

कौवा बडा विचित्र पक्षी है। वह कहने लगा, "देखो मै एक उडान मे जितनी धरती तय कर लूँ वह मेरे आधीन हो जायगी, और मै वहाँ का राजा हो जाऊँगा।"

"मेरा कानून है, कोई भी परिन्दा हवा मे नही उडे, कोई पक्षी जमीन पर नही चले और कोई पक्षी पेडो पर घोसला न रखे।"

लेकिन इसमे कुछ कमी थी क्योकि अगर ऐसा राजा हो तो सारे पक्षी गैर कानूनी करार दिये जा सकते थे। लेकिन उन्होने पहले की भाँति हवा में उडना, जमीन पर चलना और पेडो पर घोसले बनाना जारी रखा। इस बात से तो राजा की मूर्खता प्रकट हो गई।

लेकिन कौवा होता बडा विचित्र पक्षी है। आखे घुमाते हुये उसने कहा, "फिलहाल मै तुम्हे उडने, चलने और घोसले बनाने की आज्ञा देता हूँ और यह तुम्हारे लिये एक खास रिआयत है। मै बहुत उदार हूँ।"

अब भी बात न बनी क्योकि पक्षियो ने न केवल उसका आभार माना बल्कि उन्होने सुनी-अनसुनी कर दी और उन्होने अपना उडना, चलना और घोसले रखना बराबर जारी रखा। अब तो वास्तव में राजा बडा ही बुद्धू लगने लगा।

लेकिन कुछ भी हो कौवा तो विचित्र पक्षी ठहरा ही। उसने फिर वही बात दुहराई, "मै तुम्हे अभी और उडने

चलने और घोसले रखने की इजाज़त देता हूँ और यह बहुत बडी रिआयत है। देखा, मैं कितना नर्म दिल हूँ।"

सब अत्याचारियो के लिये तो उदारता उनके अत्याचार के साथ लगा हुआ जाल है। अत्याचार लोगो से उनके अधिकार छीनने के लिये इस्तेमाल की जाती है और उदारता का प्रयोग उनसे उनका सम्मान छीनने के लिये किया जाता है। चाहे अत्याचारी कितने ही वुद्धू और घमण्डी क्यो न हो सिर्फ इसलिये कि वे और ज्यादा उलझे हुये और अयोग्य है वे और अधिक वुद्धू हो जाते है और उदारता तो सदा उनके होठो पर ही रहती है।

३०. मैं जिन्दा रहना चाहता हूँ

एक गधा वहुत सख्त बीमार था। उसने बिस्तर पर पडे हुए ही डाक्टर से कहा "यह कैसी वीमारी है? मै चाहता हूँ मेरे शरीर मे खून का सचार होता रहे और यह है कि रुकता जाता है। मै अपने अग हिलाने-डुलाने की वहुत कोशिश करता हूँ लेकिन वे है कि मानते ही नही। मै चाहता हूँ—जिन्दा रहूँ और मौत है कि करीव आती जाती है। आह डाक्टर!"

डाक्टर एक मशहूर वन्दर था। उसने सिर हिलाकर कहा। "हाँ तुम चाहते हो रक्त सचार होता रहे पर वह रुकता जाता है। तुम अपने अग हिलाना-डुलाना चाहते हो पर वे मानते नही है। तुम जिन्दा रहना चाहते हो, फिर भी.."

"तो फिर?... ओह!"

"हाँ . ।"

वन्दर ने उसे कोई दवा न दी वल्कि गधे ने शान्ति से आँखे मूँद ली।

वे डाक्टर जो लाइलाज रोगी को दवा नही देते समार के सवसे अधिक नैतिक डाक्टर है।

३१. मज़े की दावत

एक भेडिये और लोमडी ने बडे अफसरों का भेष बदला और एक बन्दर उनका नौकर बन गया। वे तीनो साथ-साथ जाँच-पडताल के लिये निकले ताकि देखें लोग अब तक अपनी पुरानी परपरा निभाते हैं या नहीं।

अभी वे जंगल छोड़कर एक घाटी पर ही पहुचे थे कि उन्हे एक देहातिन दीख पडी। "आओ, अपनी जाच शुरू कर दें।" भेड़िये ने कहा, "मै विश्वास दिलाता हूँ वह बडी ईमानदार औरत है। वह हमे कभी धोखा न देगी।"

"ईमानदारी तो एक प्रकार का गुण है," लोमडी बोली, "विशेषतः जन साधारण के लिये तो बडी आवश्यक है जैसा कि मै अपने लेखों में अक्सर कहती रहती हूँ।"

"वाह-वाह!" बन्दर ने कहा।

भेडिया और लोमडी आगे बढे और बोले "ओ बाई जी, तुम्हारे यहाँ मुर्गिया भी है? ज्यादा नही मागते सिर्फ एक-एक मिल जाती।"

"मै तो शाकाहारी हूँ," बन्दर ने कहा, "अगर थोडी फलियाँ हो तो चलेंगी।"

"आप लोगो का स्वागत है," स्त्री ने कहा, "अन्दर आइये। कभी छटे-छमासे ही अच्छे घराने के लोग यहाँ आते है। हमारे लिये तो बडे सम्मान की बात है।"

जव वे तीनो स्त्री के घर पहुँचे तो भेडिये और लोमडी ने तो एक-एक मुर्गी खाई और वन्दर ने एक रकावी भरके फलियाँ उडाई । लेकिन कोई एक भी तृप्त न हो सका ।

"कोई भेड-वेड भी है ?" भेडिये और लोमडी ने पूछा । एक भेड चार मुर्गियो के वरावर होती है ।

"मटर की फलियाँ मिलेगी क्या ?" वन्दर ने पूछा । "मुझे तो ऐसी सस्ती चीजे वहुत भाती है ।"

"मेरे यहाँ एक भेड है", देहाती स्त्री ने कहा, "मटर भी होगी । आप शौक से उन्हे खाइये ।"

भेडिये और लोमडी ने भेड को आधा-आधा खाया । बन्दर एक टोकराभर के मटर खा गया और जो बची थी उन्हे उसने अपने बोरे में भर लिया । फिर भी भेडिये और लोमडी की तृप्ति न हुई और वे बोले

"सूअर होगे ? जरा मुँह का मजा वदलने के लिये कुछ और चाहिये ।"

"कुछ अखरोट मिल जायेगे ?" बन्दर बोला ।

"मेरे पास एक खूब मोटा सूअर है !" देहाती स्त्री ने कहा । "मैं तो आप महानुभावो से प्रार्थना करने वाली थी कि आप उसे भी चख ले । मेरे पास अखरोट की एक टोकरी भरी है ।"

फिर भेडिये और लोमडी ने सूअर आधा-आधा खा लिया । बन्दर ने अखरोट की आधी टोकरी खाली करके

अपने बोरे में भर लिये और बाकी जो उसे बडे अच्छे लगे वह उसने खा लिये। लेकिन भेडिये और लोमडी का दोजख अभी तक न भर सका था और इससे वे दोनो गरम हो गये।

"अपनी गाय यहाँ लाओ, हम उसे भी खायेगे।" उन्होने हुक्म दिया।

"मेरे लिये भी कुछ और लाओ!" बन्दर ने कहा।

देहातिन गाय लेने गई और साथ में कुछ और भी ले आई।

लेकिन गाय खाने के बाद भी भेड़िये और लोमडी ने महसूस किया कि उनके पेट नही भरे है। बन्दर भी और कुछ खाना चाहता था।

"और क्या है तुम्हारे पास!" उन्होने पूछा।

"एक चीज़ और है मेरे पास!" स्त्री ने कहा। उसके हाथ मे एक कुल्हाडो थी जिससे वह लकडिया काटती थी और उसने उन्हे भी उसका मजा चखाया। और भेडिया, लोमडी तथा बन्दर तीनो जीवित उस देहातिन के घर से न लौट सके।

३२. विचार और व्यवहार

कई दिनो तक बर्फ गिरती रही थी, यहाँ तक कि सारे पहाड बर्फ से ढँक गये थे और विशालकाय, श्वेत पके हुये रोल लगने लगे थे। धरती के तो सारे निशान गायब हो चुके थे।

"बहुत अच्छे, यह बड़ी उम्दा चीज़ है!" एक कस्तूरी मृग ने कहा जिसने बाहर झाँकने के लिये अपनी गुफा में एक खिडकी खोल ली थी। "मेरे लिये तो बस यही बेहतरीन मौसम है। मेरा कमरा काफी गर्म है और खाना भी मैंने काफी पका लिया है। शिकारी अब मुझे नही पा सकते क्योकि सारे रास्ते छिप गये है।" उसने बड़े इत्मेनान के साथ घास चबाई। उसने उसे एक बार तैयार करके रख लिया था और अब अवकाश मिलने पर बर्फीला प्राकृतिक दृश्य देख रहा था।

लेकिन बर्फ से ढके हुये दृश्य के विचार ने इस चैन से बैठे हुये कस्तूरीमृग को यह महसूस कराया कि वह बहुत शुद्ध हो गया है। चुनांचे उसने कहा, "नही-नही। इस गदे कमरे मे बर्फ का आनन्द लाभ करना असम्भव है। मैंने पहाड के ऊपर एक गढी बनाई है। मै शराब का घडा, कविता की पुस्तक वगैरह लेकर ऊपर पहुँच जाता हूँ और वही कुछ दिन गुज़ारूगा।"

इस प्रकार कस्तूरीमृग ने वह गुफा छोड दी और दौड़कर

पहाड पर बनी हुई गुफा मे चला गया। बस फिर क्या था वह जो पहाड पर चढा तो शिकारी को उसके पद निशान देखकर उसे ढूंढना सम्भव हो गया।

यदि अमल नही छिपाये जा सकते तो विचार भी गुप्त नही रह सकते। क्योंकि विचारो के ही अमल के होते है।

३३. दुश्मन को छोटा मत समझो

एक मुर्गे ने देखा कि जरा-सा कनखजूरा जमीन पर रेंग रहा है तो झट अपने पर फडफडाये जैसे अपनी लडने की शक्ति बटोर रहा हो। और उस नन्हे जानवर को निगल जाना चाहता हो।

पास ही एक हस ने जब मुर्गे की यह हरकत देखी तो उसे लगा जैसे वह कोई बहुत बडे युद्ध की तैयारी कर रहा हो। उसने ज़रा मज़ा लेकर कुछ व्यग के साथ कहा

"आहा! यह जोश है तब तो भाई पहाड हिला दोगे।"

"तो और क्या करे! मै तो कहता हूँ कि दुश्मनो को हमें दुश्मन ही समझना चाहिये चाहे छोटे हो या बडे।" मुर्गे ने झिडक कर कहा।

३४. खुशामद की ताकत

एक जल-भैंस थी जो इतनी हिंसक और तेज स्वभाव की थी कि सब जगह बदनाम थी। एक दिन उसे बहुत गुस्सा आया, अपना रस्सा उसने तोडा और खेतो मे ऐसी अधाधुध भागी कि बहुत-सी फसल उसने रौद डाली। हरेक ने उसे पकडने की कोशिश की। उन्होने उसे घेर लिया, लेकिन जितने ज्यादा लोग वहा आते गये भैस भी उतनी ही हिसक होती गई। उसने अपने सीगो से उन पर वार किया और अनेक व्यक्ति बुरी तरह घायल हो गये लेकिन उस पर वे काबू न पा सके।

उसी समय सौभाग्यवश एक गडरिया दौडा हुआ आ पहुँचा। सब जानते थे वह बहुत छोटा है लेकिन उसकी बाते बडो की-सी थी।

"तुम सब बेवकूफ हो," उसने उनका उपहास किया। और आश्चर्य की बात कि बिना किसी भय के वह मुस्कराता हुआ भैस के पास चला गया। उसने घास का एक गट्ठा जो वह लाया था भैस के आगे डाल दिया और उसकी पीठ थप-थपाने के लिये पीछे खिसक गया। भयकर पशु तुरन्त ठण्डा पड गया और इतने मे लडका उछल कर उसकी पीठ पर जा बैठा और जोर-जोर की आवाजो से वह उसे घर की ओर ले जाने लगा।

३५. जायदाद का लालच

गाय और कुत्ते ने तय किया कि एक दिन शाम को वे एक साथ निकल भागे और दौड कर दूर दराज पहाडो में पहुँच जहाँ आजादी से जिन्दगी बसर कर सकें।

शाम को जैसा कि निश्चित हुआ था, कुत्ता आया और उसने अपने तीखे दांतो से गाय की रस्सी काटनी शुरू कर दी। लेकिन गाय ने जल्दी से उसे रोक दिया और कहा, "अरे ऐसा न करो! महरबानी करके रस्सी की गाठे खोलो यह रस्सी बडी अच्छी है। और मेरी कोई जायदाद नही है, मै इस रस्सी को अपने साथ ले जाना चाहती हूँ।" कुत्त को गाय की आज्ञा का पालन करना पडा उसने रस्सी को खूँटे से खोल लिया, अब सिर्फ वह गाय की नाक में लटका हुआ था जिससे उसे लेजाने मे आसानी हो गई थी। चुनाचे वे दरवाजे से वाहर निकले और भाग लिये।

फिर भी जब कुत्ता काफी दूर तक दौडता गया तो गाय बीच में रुक गई। उसकी रस्सी सडक के किनारे पडी एक घिसी-पिटी चट्टान से अटक गई। इसलिये उसके मालिक के लिए जो उसका पीछा कर रहा था उसे पकड़न और लौटा लाने मे आसानी हुई।

"मेरी वस एक ही चूक हो गई कि मै इस रस्सी को अपने साथ ले जाना चाहती थी," गाय ने अपने आप से कहा? "यह जायदाद से चिपके रहने की वृत्ति ही ने मेरा काम विगाडा है।"

३६. प्रेम और भावुकता

वसन्त का मौसम था। एक सुहावने दिन एक किसान अपनी गाय को लेकर खेत जोतने गया। गाय के पीछे उसका बछडा खेलता-कूदता चला गया। जब गाय को जोता गया और वह काम शुरू ही करने वाली थी कि उसने अपने बेटे से कहा। 'बेटा, तुम जाओ पास के उस मैदान मे खेलो। अच्छा बच्चे !"

लेकिन वह सुशील बछडा अपनी मा का बडा आदर करता था। उसने अपना नन्हा सिर हिलाया और बोला, "नही अम्मा, मै तुम्हे नही छोडना चाहता। तुम्हे कितनी मुसीबत तो उठानी पड रही है। मै भी तुम्हारे साथ चलूँगा अम्मा और मुझे यकीन है तुम्हारा बोझ कुछ हल्का हो जायगा।"

उसकी मा खुश हो गई और उसने उसे वही ठहरने दिया। लेकिन अब उसके कारण उसे बराबर बच्चे पर नजर रखनी पडी क्योकि उसे डर था कही वह गिर न पडे या बहुत तेज चलने लगे या बहुत पीछे न रह जाय। इस कारण उसकी रफ्तार काफी सुस्त हो गई। किसान इस बात से बहुत असन्तुष्ट हुआ और गाय को चलाने के लिये बराबर चाबुक मारता रहा। और इस तरह गाय को हमेशा की तरह कही अधिक गालियाँ और मार सहनी पडी। आखिरकार उसने फिर बछड़े से कहा। "मेरे प्यारे बच्चे अगर तुम्हें वास्तव मे

मुझसे प्रेम है तो मुझे छोड दो ताकि मैं इस भारी दण्ड से बच जाऊँ। तुम्हारे कारण मुझ पर जो चाबुक पडी है उन्हे गिनना मुश्किल है।"

प्रेम और भावुकता मे बहुत-सी ऐसी बेकार चीजे है जिन्हे आप पसन्द करते होगे लेकिन उन्हे त्याग देने मे आप का कल्याण है ।

३७. जिन्दगी का तूफान

कडी गर्मी पड रही थी। एक दिन तीसरे पहर को जब प्राणी झुलस गये थे पसीने मे शराबोर थे बिजली पहले तो कुछ दूर हल्की-सी कडकी और फिर समीप से समीपतर होती गई। क्षितिज के ऊपर काले बादल इकट्ठे हो गये। यह स्पष्ट था कि तूफान उठ रहा है।

एक मकडी जो एक पेड पर अपने जाले पर खडी थी तूफान को बुलावा देने की बडी इच्छुक थी या उसका देवता बनना चाहती थी। चुनाचे उसने जोर से कहा। "हम कितना ही उसे देखें, वक्त करीब आ गया है! ओ, चमकदार सुनहरे नाम निकल और फनफना! ओ सर्व भयानक बिजली तडक! हवा और बारिश जरा फुर्ती से आओ! तूफान जितना बडा होगा बेहतर है।"

फिर तूफान उठा। आप मकडी को देखते। वह अपने जाल के साथ भय मे कांपने लगी और अन्त मे घबरा कर एक पत्ते मे लिपट गई और वहां हवा के झोकों ने उसे ऐसा उछाला कि वह बेहोश हो गई। जब तूफान उतर गया तो एक बडा सुन्दर इन्द्रधनुष पूर्वी आकाश पर फैल गया, सन्ध्या के बादल पश्चिम मे नजर आने लगे यहां तक कि डरपोक टिड्डे भी सन्ध्या की ठण्डक की सराहना में गीत गाने लगे तब

कही जाकर उसने अपनी आँखे खोली और वक्त मालूम किया।

"आह मित्र," पेड ने कहा, "अगर तुम सही किस्म के तूफान आने पर थोडा बहादुर हो जाया करो तो तुम एक महान भविष्य वक्ता कवि के नाम से याद किये जाओ।"

शर्म के मारे जमीन में डूब जाना चाहा। आखिरकार वह अपमानित होकर भागा। फौरन वह दौडा-दौडा अपने दोस्त से शिकायत करने पहुँचा और उससे राय मांगी कि अब वह क्या करे।

"आह, मेरी तो पहली बार ही में तकदीर फूट गई!" उसने बडे दुःख के साथ कहा। "अब तो मेरी एक ही आस है कि तुम्हारे पास जो मरहम है उसे लगा कर मेरी नई दुम उगा दो। और अगर ऐसा न हुआ तो मै खुदकशी कर लूँगा।

सौभाग्य की बात कि उसके मित्र ने उसकी दुम की गाँठ खोलदी और चूहा अपने पुराने आकार मे आगया। और अब चूहे ने यह महसूस करके अपने को धन्य समझा कि उसके भी दूसरो की ही तरह साबित दुम है।

३८. इज्जत का भूखा

एक चूहे ने देखा कि सभी चूहो के एक-एक दुम है, अगर उसके भी वही है तब तो वह भी दूसरो की तरह मामूली-सा चूहा कहलायगा। यह कहने का उसे साहस ही न होगा कि वह एक असाधारण चूहा है और उसे बहुत शर्मिंदगी होगी। इसलिए एक दिन उसने निश्चय किया और अपने मित्र के पास जाकर उसने प्रार्थना की कि वह उसकी दुम काट डाले।

"हालांकि सभी लोग अपनी उम्मीदे अपनी दुमो पर रखते है और उसे अपनी जिन्दगी का सबसे बडा खजाना समझते है, लेकिन मै इसे नही चाहता।"

उसका मित्र उसे अच्छी तरह जानता था और जानता था कि इस हरकत के लिए वह बाद मे पछतायेगा चुनांचे उस ने चूहे की दुम मे एक गिरह लगादी और उसे जुल दे दी कि दुम वास्तव में काट दी गई है।

अब चूहे ने यह समझ कर कि उसकी दुम कट चुकी है यह चाहा कि वह अब एक नया फैशन चलायेगा और उसके द्वारा सब मे प्रसिद्ध हो जायगा। लेकिन जब वह अकड-अकड कर इस प्रकार दूसरे चूहो के सामने चलने लगा जैसे कोई भारी-भरकम व्यक्तित्व का महान् व्यक्ति चला आ रहा हो तो पहले तो उसके साथी उसे आश्चर्य से तकने लगे पर फौरन ही वे जोर का ठहाका मारकर हँस पडे। वे हँसते रहे, हँसते रहे और कोई उस चूहे के बारे मे बाते करता रहा तो कोई व्यंग्य करता रहा और सबने उसका ऐसा मजाक उडाया कि उसने

शर्म के मारे जमीन मे डूब जाना चाहा। आखिरकार वह अपमानित होकर भागा। फौरन वह दौडा-दौडा अपने दोस्त से शिकायत करने पहुँचा और उससे राय मांगी कि अब वह क्या करे।

"आह, मेरी तो पहली बार ही में तकदीर फूट गई!" उसने बडे दु ख के साथ कहा। "अब तो मेरी एक ही आस है कि तुम्हारे पास जो मरहम है उसे लगा कर मेरी नई दुम उगा दो। और अगर ऐसा न हुआ तो मै खुदकशी कर लूंगा।

सौभाग्य की बात कि उसके मित्र ने उसकी दुम की गांठ खोलदी और चूहा अपने पुराने आकार मे आगया। और अब चूहे ने यह महसूस करके अपने को धन्य समझा कि उसके भी दूसरो की ही तरह साबित दुम है।

३६. साफ़ और चालबाज

एक बिल्ली खाने की तलाश मे एक रसोई खाने पर चढ गई। पहली चीज जो उसे वहाँ दिखाई दी एक बर्तन था जिस पर कोई ढक्कन नही था। लेकिन जब उसने देखा कि बर्तन खाली है तो बोली "दरअसल इसकी तरफ देखने की तो जरूरत ही न थी, जाहिर है इसके अन्दर क्या हो सकता था।" फिर उसने दूसरे बर्तन को देखा जिस पर ढक्कन था और देर तक उसे घूरती रही। और जितनी ज्यादा देर तक वह उसे तकती रही उसका लोभ उतना ही बढता गया। चुनांचे उसने बडी हिम्मत से ढक्कन उतारा लेकिन हाय, वह भी खाली था।

बिल्ली को बडी निराशा हुई और चिन्तित हो कहने लगी, "यहाँ तो सब के सब खाली है।"

सिर्फ कुछ ही लोग जब उनके पास कुछ नही होता अक्लमदी की बाते करते है। दूसरे ऐसे है जो जान बूझकर अपने आप को रहस्यमय बना लेते है और यह जाहिर करते है कि वे बडे गहरे है। वे लोगो को चालबाजो मे ले लेते है और उनका बहुत समय जाँचने-परखने मे खर्च करवा लेते है लेकिन असल मे उससे उनको कुछ नही मिलता।

४०. कायरों की बहादुरी

एक था बंदरो का गिरोह। चूँकि वे बन्दर बेकार और निकम्मे किस्म के न थे चुनांचे वे सब के सब एक ऊँचे पहाड पर चढ़ने के लिए निकल पडे। लेकिन पहाड भी कोई मामूली नही था बल्कि उसकी एक विशाल गजी चोटी थी जो बहुत ऊँची और सुन्दर थी जिस पर खडे होकर कोई भी विस्तृत देहाती प्रदेश नदिया और कुछ भी कुदरती नजारा नीचे मौजूद था देख सकता था। लेकिन बदकिस्मती उनकी कि बेचारे अभी चोटी पर पहुँचे भी न थे कि एक तूफान बरपा हो गया। तूफान भी कोई छोटा-मोटा नही था जिससे केवल डरपोक ही डरे बल्कि चारो ओर से काले बादल उमड़ आये जिससे सारा धरती-आकाश काला हो गया। बिजली निरतर तडखती रही जैसे सारा आसमान आग की लपटो में हो। और बादलो की भयानक गरज और गडगडाहट तो और भी खौफ-नाक थी ऐसा मालूम होता था जैसे धरती फट रही है।

वास्तव मे वह ऐसा भयकर दृश्य था कि ये असाधारण स्वभाव के बन्दर सारे डर के मारे पीले पड गये और बुरी तरह लरजने लगे लेकिन वे कर ही क्या सकते थे? फिर पहाड की चोटी पर न कोई गुफा थी जहा वे शरण ले सकते और न ही कोई जगल जहा वे छिप सकते थे। वे डर कर उडना या सीधे नीचे घाटी मे कूद पडना अपनी शान के खिलाफ समझते थे।

"ओह, हमारा तो हो गया बेडा गर्क।" वे भयभीत हो

चिल्लाये। और घबराहट ने उन्हें बुरी तरह दबोच लिया। "'लेकिन हमे इस भयानक तौर से मरने का तो ख्याल भी न आया था !" फिर बिना कुछ देखे भाले वे सब इकट्ठे गडमड हो बैठ हो गये, आँखे मूँदली और बडे जोर से रोने चीखने लगे। लेकिन जितना ज्यादा वो रोते उतने ही उदास वे होते जाते जितने ज्यादा रोते उनकी चीखें उतनी ही जोर की होती जाती और रोते-रोते उनके भय भी बढते जाते ! और फिर जितना ज्यादा वे डरते और जोर-जोर से दहाडते। यहाँ तक कि उन के आँसुओ का समुद्र उनकी आँखो से बह गया और एक घडी वह आई जब उन्हे सिवाय अपनी सिसकियो, अपने ही रोने धोने के कुछ न सुनाई दिया और वे प्रत्येक वस्तु के प्रति उदासीन हो गये और सब कुछ भूल गये। और अत में जब वे रो-पीट रहे थे और सब कुछ भूल बैठे थे वह भयानक तूफान गुजर गया।

इस प्रकार उनका साहसिक कार्य समाप्त हो गया। लेकिन बन्दरो ने इसे बहुत बडे गर्व की बात समझा और जब कभी इसका जिक्र आया बडी, शेखी के साथ कहा "हम उस भयानक तूफान के महान युग मे रहे, हम उस भयानक शिखर पर चढे और घोर रोदन द्वारा हमने बडे-बडे चमत्कार कर डाले। हम भयानक तूफान मे साफ बचकर निकल आना जानते है !"

४१. बुराई का तुरंत खातमा

एक आदमी था जिसे यह मालूम था कि समुद्र में ज्वार आने वाला है इसलिए उसने एक छोटी-सी नाव बनाई और उसे नदी के किनारे तैयार रख दी और कहने लगा, "जब ज्वार आयेगा तो मैं इसे पानी में डुबो दूंगा और फिर समुद्र में चल दूंगा।"

कुछ ही देर बाद ज्वार उठने लगा लेकिन वह अभी था कुछ नीचा ही। "थोडी देर और इन्तजार करलूँ" "उसने कहा "जब ज्वार और ऊंचा हो जायगा तो मैं नाव खोल दूंगा।"

धीरे-धीरे ज्वार ऊंचा होने लगा लेकिन वह बोला, "अभी तक काफी ऊंची नही हुई है। ज्योहि कुछ ऊंची हुई कि मैं अपनी नाव डुबो दूंगा।" यह कहते हुए उसने नाव कुछ और आगे बढा दी।

फिर ज्वार कुछ ऊंचा और ऊंचा होता गया लेकिन वह आदमी भी किनारे से और आगे नाव सरकाता गया यहाँ तक कि वह पहाडी तक पहुच गई।

और अब उसने कहा, "अब नाव खेने का समय नही ज्वार बहुत चढ चुका है।"

४२. दिल की तसल्ली

तीन आदमी मिट्टी के घडो, लोटो और वर्तनो के तान ठेले पहाड के ढलान से ऊपर को ढकेल रहे थे।

पहाडी ढलान और खसवाँ ऊँचा था और रास्ता वकरी की पगडण्डी से कुछ वेहतर न था जिसके एक ओर वडी ऊँची ढलवाँ चट्टान थी और दूसरी ओर बहुत ही सीधी गहरी घाटी थी। वेशक वह काम था वहुत खतरनाक। इन्ही कठि-नाइयो की बदौलत वे कुछ ही दूर गये होगे कि उनमे से एक की गाडी उलट गई और उसके सारे वर्तन चूर-चूर हो गये।

दूसरी आदमी कुछ खुश किस्मत था · उसने अपना ठेला आधी दूर ही ढकेला कि वह एक चट्टान से टकराया और सारे बर्तन बिखर गये। लेकिन इस बार भी एक बर्तन साबित न बचा।

तीसरे आदमी ने अपना ठेला शिखर तक ढकेला और ले गया। वहाँ जाकर उसने खुश हो कहा "अरे वाह वाह! मै तो ले आया!" साथ ही उसनें संतोष की सास ली और अपनी पकड कुछ ढीली करदी। लेकिन उसकी गाडी भी एकदम उलट गई, सारे बर्तन भी नीचे गिर पडे और जब उसने गौर से देखा तो एक बर्तन भी साबित न था।

इस प्रकार यह कहा जाना गलत नही कि उन तीनो के तमाम बर्तन टूट गये थे। लेकिन इससे वे जरा भी हौसला-पस्त न हुए और एक दूसरे के आगे सिर हिलाते और मुस्कराते

हुए उन्होने फौरन अपनी सफलताओ की तुलना की। पहाड के शिखर पर बैठकर उन्होने एक बहस शुरू कर दी।

"स्पष्ट ही मै सबसे बुरा आरोही हूँ।" पहले ने कहा "लेकिन मैंने सबसे ज्यादा ताकत बचा रक्खी है और यही मेरी खूबी है।"

"मुझे तो कोई शिकायत करना ही नही है" दूसरे ने कहा। "मुझे तो आधे रास्ते मेहनत करनी पडी लेकिन आधे रास्ते तक अपना ठेला लाने में सफल रहा, मैंने कुछ नही खोया।"

"लेकिन मै अकेला ही हूँ जो अपना ठेला ऊपर तक ले आया। और यही मेरी शान है।" तीसरे ने कहा।

अन्त में वे इस नतीजे पर पहुँचे "हालाकि हमारे सबके वर्तन चूर-चूर होगये लेकिन सबमे कुछ अच्छाइयाँ भी है।" उन्होने यह कहा और खुश-खुश अपने ठेले वापिस ले आये।

४३. कायर और साहसी

एक बूढे आदमी के तीन बेटे थे। सबसे बडा बेटा बहुत अच्छा मल्लाह था, हिम्मती, बहादुर इरादे का पक्का और जो फर्ज सामने हो उसे पूरा करने के लिए जोखम की परवाह न करने वाला। बाप उसे बहुत प्यार करता था। वह अपने उस वेटे पर फूला नही समाता था। उसे अपने घर की आन समझता था। पर एक दिन तूफान आया और समुन्दर की तुन्द लहरे उस निडर बहादुर बंटे को निगल गई।

दूसरा बेटा एक कोयले की खान मे काम करता था। वह अथक और मेहनती था। अपने साथियो से वह कही ज्यादा मजबूत और हिम्मती था। वह ईमानदार और सच्चा था। अपने साथियो या मित्रो की मदद करने मे उसे हमेशा आनद आता था। इसीलिए खान के सब मजदूर और खासकर नौज-वान उसे बहुत चाहते थे और उसकी मित्रता की वडी कद्र करते थे। वाप भी उसे वहुत प्यार करता। सवसे वडे वेटे के मरने के वाद से इस दूसरे वेटे की तरफ वाप का प्यार और वढ गया था। वाप के मन को उसे देखकर वडी शान्ति मिलती थी। उसे वह अव अपने लिए भगवान की सवसे वडी देन समझता था। पर थोडे ही दिनो मे अपनी वहादुरी और अपने सेवा भाव के कारण ही यह दूसरा वेटा भी चल वसा। उस दिन वह खान मे काम कर रहा था कि एक खम्वा गिर गया और खान की जमीन नीचे को धँसने लगी। वडी वहादुरी के साथ उसने एक खम्वे को अपने ऊपर सभाले रक्खा जिससे

उसके बहुत से साथियो की जान बच गई पर वह खुद वही दब कर मर गया।

बूढे बाप का दुख अब बहुत ही बढ गया। एक रात भर के अन्दर वह हद से ज्यादा कमजोर और निढाल दिखाई देने लगा। पर अभी उसके एक बेटा और था। इसी से उसे कुछ तसल्लो थो। बूढे बाप के विचार अब कुछ बदले। उसने पक्का इरादा कर लिया कि—"अब मै अपने इस सबसे छोटे बेटे को इस तरह बहादुर और निडर न बनने दूँगा। अब इस आखिरो बेटे को खो बैठने का रज मेरी बर्दाश्त से बाहर की चीज है।"

उसने ठडी साँस भरकर कहा—"मेरा यह बेटा कायर और निकम्मा रह जाय तो अच्छा, बजाय इसके कि उसकी वहादुरी और उसके गुनो के कारण मै उससे भी हाथ धो बैठूँ।"

इसलिये बुड्ढे ने उस आख़री बेटे को अपने साथ रखकर खुद तालीम देना शुरू किया। उसने उसे इस तरह रखा जिस तरह शायद कोई बूढी औरत अपनी छोटी सी पोती को भी न रखती हो। वह लडका सचमुच बाप का आज्ञाकारी निकला। जैसा बाप चाहता था वैसा ही हो गया—डरपोक, स्वार्थी निकम्मा। पर एक अजीब बात यह हुई कि अब थोडे ही दिनो बाद उस बुड्ढे बाप को इतना दुख हुआ और इतनी ग्लानि होने लगी जितनी उसे जीवन में कभी नही हुई थी। अपनी गलती पर वह बार-बार पछताता था। अपने

उस बेटे से उसे नफरत होने लगी और उसे उस पर दया आने लगी। बूढ़े ने कहा।

"इस निकम्मेपन से, उस मरियलपन से मुझे हमेशा चिढ़ रही है। पर अब स्वार्थ और मोह के वश मे आकर मैंने खुद उस तीसरे बेटे का यह हाल कर डाला ! उसके जीने से क्या फायदा, जिसे न समुन्दर डुबो सके न पहाड़ कुचल सके ?"

अब बूढ़े बाप के लिये सचमुच अपने उस बेटे से प्यार करना नामुमकिन हो गया, क्योंकि उसका प्यार केवल जबर-दस्त लहरों वाले समन्दर, या ऊँचे अडिग पहाड़ और अपने दोनो बड़े बेटो जैसे साहसी आदमियों की तरफ ही जा सकता था। बूढ़े बाप के दिल मे अब रंज और ग्लानि की कोई सीमा न रही। यह उसे आखरी दिनो के अपने गलत विचारो और अपने हाथो अपने सब से छोटे बेटे को बिगाड देने की सजा थी।

४४. साहस की उड़ान

एक जवान उकाब पक्षी और उसकी माँ एक साथ रहते थे। माँ बहुत बूढी हो गई थी। एक दिन कुछ देर तक उडने के बाद वह पहाड की एक कगर पर बैठ गई और कहने लगी—"मेरा बदन सचमुच थक गया है। अब मै आराम करूँगी।" पर देर तक आराम करने के बाद भी उसमे फिर से ताकत न आई। वह अब अपने को निढाल महसूस करने लगी। उसका बेटा मजबूत और जवान उकाब था। वह दूर से उड कर आया। मा का यह हाल देखकर नीचे उतरा। और माँ की देखभाल और रक्षा के लिए उसके पास रहने लगा। अब वह माँ को छोडकर कही नही जाता। अजीब बात यह हुई कि बेटे को अपने पास देख कर माँ और भी कमजोरी महसूस करने लगी। उसने अपने बेटे से कहा—"बेटा! यह ढग ठीक नही, तुम जितने प्रेम से मेरी देखभाल मे लगे रहते हो उससे मुझे और भी अधिक कमजोरी और थकान मालूम होती है। अब बेटा, दूसरा ढग आजमा कर देखो। तुम आसमान में उडो और खूब ऊँचे मडलाओ। मै तुम्हे मडलाते देखूँ तो मेरी हिम्मत खुले।"

इस पर उसका बेटा, वह जवान उकाब, खूब ऊँचे जाकर आजादी और बहादुरी के साथ आसमान में मडलाने लगा। मा कुछ देर तक शौक के साथ उसे देखती रही। फिर किसी न किसी तरह वह उठ खडी हुई और खुद उडने लगी, और

उतने ही जोर से उडने लगी जितने जोर मे उसका वेटा उड रहा था।

अगर कोई वूढा आदमी चलना फिरना भूल गया हो तो सवसे आसान तरीका यह है कि नौजवानो को चलते फिरते देखे। फिर उस वूढे के दोनो पैर अपने आप चलने लगेंगे। इसी तरह जवानो की वहादुरी के किस्से सुनना भी वूढो की तन्दुरुस्ती के लिये वहुत अच्छा होता है। नौजवान आपके आस पास हो तो वुढापे से क्या डर? वुढापे से डर तो तव ही है जव आप नौजवानो से वचते हो, उन्हे नापसन्द करते हो और उन्हे अपने से दूर रखते हो।

४५. अत्याचार का फल

एक साप एक दरख्त को मार डालना चाहता था। खूब सोचकर उसने एक नई और ज़बरदस्त चाल निकाल ली। साँप वडा विद्वान था। उसकी विद्या इस मामले में उसके बडे काम आई। उसने देख रखा था कि बहुत से दरख्तो पर जब बेलें लिपट जाती है तो दरख्त निकम्मा होकर मर जाता है।

साप ने सोचा—"उन बेलो से मै कही अधिक मोटा और मजबूत हूँ। इसलिये अगर मै इस दरख्त पर चारो तरफ से लिपट कर उसे खूब कस लू तो दरख्त एकदम घुट कर नही मरेगा तो कम से कम धीरे-धीरे सूख कर तो मर ही जायगा।"

यह सोचकर वह साप उस दरख्त पर चढा। दरख्त के तने पर चारो तरफ से लिपट कर उसने उसे ज़ोरो से कस लिया। वह उसे और ज्यादा से ज्यादा कसता गया। इस उम्मीद में कि दरख्त जल्दी खतम हो जायगा। पर जब उसने दरख्त की तरफ देखा तो दरख्त वैसा का वैसा ही खडा था। साप को क्रोध आया। उसने और अधिक जोर के साथ दरख्त को कसना शुरू किया। फिर जब उसने दरख्त को देखा तो दरख्त फिर वैसा का वैसा ही खडा था।

साप को अब इतना अधिक क्रोध आया कि दरख्त को श्राप देते हुए उसने कहा—"तुम समझते हो कि तुम्हारे इस

तरह खडे रहने से और यह समझने से कि आखिर मैं थक जाऊँगा तुम्हे कोई लाभ होगा ?"

साप ने तय कर लिया कि अपनी चाल में डटे रहकर दरख्त को घोट कर मार ही देना है चाहे कितनी भी देर क्यो न लगे। उसने दरख्त को और कसा और पल भर के लिये भी कही ढील नही आने दी। अब उसे बहुत अधिक देर तक इन्तजार करना न पडा। या तो शायद आखिकार साप ही ने थक कर यह तय कर लिया कि जो थोडी सी शक्ति मुझ मे बाकी रह गई है उसे अब अपनी ही रीढ की हड्डी तोडने में खर्च कर डालूँ, और या शायद दरख्त का तना यकायक और मोटा हो गया और उसने साप के दो टुकडे कर दिये, जो भी हुआ हो, थोडी ही देर मे वह साप एक सडी हुई रस्सी की तरह टुकडे-टुकडे हो कर जमीन पर गिर पडा।

४६. ज़ालिम को मजा चखाया

जगली शहद की मक्खियो का एक झुण्ड एक दरख्त के ऊपर रहने के लिये अपना छत्ता बना रहा था। दरख्त की शाखो मे मक्खिया इधर से उधर से उधर से इधर तेज़ी से आ जा रही थी। काफी शोर और जोश था। सब भिनभिना रही थी। जगल की शान्ति भग हो रही थी। एक साप जगल का मुआइना करता हुआ वहाँ से निकला। इस शोर शर को देखकर वह बहुत बिगडा और कहने लगा—

"अव्वल तो इस तरह का सारा काम बडी मूर्खता का है। किसी बुद्धिमान नीतिज्ञ ने कहा है कि जो देश हमेशा शोर व गुल मचाते रहते है उनमें शान्ति नही रह सकती। यह या तो विदेशियो की बेजा मदाखलत और शरारत है और या देश के अन्दर घरेलू जग है और या कम से कम चाय के प्याले में तूफान है। जो हो, बहुत ही बेवकूफी की बात है।

"दूसरी बात यह है कि बहुत से लोगो के इस तरह एक साथ मिलकर काम करने की यह आदत बडी गन्दी आदत है। मालूम होता है तुम्हारी सबकी गाडी पटरी से उतर गई है। सब शाति भग हो गई है। शहर के सब लोग बागी हो गए हे। काई ऐसा नही है जो सब की नुमाइन्दगी कर सके। मैं इसे बरदास्त नही कर सकता।"

वह साप खुद अपने को एक अन्तराष्ट्रीय पुलिसवाला समझता था। राजनीति के अलावा वह समझता था कि धर्म

और इंजील का प्रचार करना भी उसी का फर्ज है। वह फौरन उस दरख्त पर चढ गया। उसने तय कर लिया कि मबसे पहले उस छत्ते को तोड दिया जाय जो शहद की मक्खिया बना रही थी।

पर एकदम वह साप फिर पीछे को लौटा और गिरता पडता, फिसलता जमीन पर आ टपका। शहद की मक्खियाँ उसके पीछे पडी हुई थी। साँप को मजबूर होकर जल्दी मे एक घनी काटेदार झाडी मे घुस जाना पडा।

— —